

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुक्रित बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।					
सतनाम	ग्रन्थ दरिया सागर					सतनाम
	साखी - १					
	ग्रन्थ दरिया सागर, मुक्ति भेद निजुसार।					
सतनाम	जो जन शब्द बिवेकिया, सोजन उतरहिं पार॥					सतनाम
	चौपाई					
सतनाम	प्रथमहिं सतपद किन्ह बखाना। प्रेम प्रीति ले सुरति समाना।१।					सतनाम
	सतपद अनुभव किन्ह अनुसारा। लोक वेद त्यागों सब भारा।२।					
सतनाम	लोक वेद यह हम सब जानी। केवल नाम निरन्तर आनी।३।					सतनाम
	गर्व गुमान काम जग त्यागा। प्रेम रुचित निज हृदये लागा।४।					
सतनाम	वेद विधि नहिं करो बखाना। छप लोक साहेब स्थाना।५।					सतनाम
	साखी - २					
सतनाम	तीन लोक के उपरे, तहां अभै लोक विस्तार।					सतनाम
	सत सुकृत के बीरा पावे, पहुंचे जाय करार॥					
	चौपाई					
सतनाम	कृपावन्त कृपा जब कीन्हा। दया सिन्धु सुखा सागर दीन्हा।६।					सतनाम
	मैं सामर्थ नहिं पूरो ज्ञाना। सत साहेब शब्द निर्वाणा।७।					
सतनाम	अनन्त लोचन सम ज्ञानी होई। अगम रूप कहि सके न कोई।८।					सतनाम
	सत्तर युग जिन नख में राखा। कहु कैसे बरनि सके कोई भाषा।९।					
सतनाम	को कविता पद पावे ऐसा। नाम सरूप कहु बरने कैसा।१०।					सतनाम
	उनकर रूप कहा नहिं जाई। मन महं सकुच लगे कछु भाई।११।					
सतनाम	नौ लक्ष करि जाके है माथा। आदि अन्त सुक्रित हहिं साथ।१२।					सतनाम
	सकल रूप महिमा उजियारा। बरति रहा सब दृष्टि पसारा।१३।					
सतनाम	करि नहिं सको तिलक के बरना। लक्षमनि थकित भये जेहि शरना।१४।					सतनाम
	यह लोचन तेज कहा नहिं जाई। तनिक दृष्टि सब पाप कटाई।१५।					
सतनाम	तनिक ओंकार ज्योति के कीन्हा। तीन लोक जोति रचि लीन्हा।१६।					सतनाम
	ताके कवि का करे बखाना। एक नाम निजु हृदय आना।१७।					
सतनाम	अनन्त नाम सकल बौराना। माया फन्द सभ रहे भुलाना।१८।					सतनाम
	साखी - ३					
सतनाम	एक सो अनन्त भौ, सो फूटी डार विस्तार।					सतनाम
	अन्तहू फेरि एक है, ताहि खोजु निजुसार॥					
	चौपाई					
सतनाम	जोतिहि ब्रह्मा विष्णु प्रति पाला। जोति रूप धरि रहा गोपाला।१९।					सतनाम
	पुरुष न होहिं आपु औतारा। जोति गाढ़े सब करु उपकारा।२०।					
सतनाम	जोति रूप जगत सब धरई। जहाँ तहां दुष्टन सब दलई।२१॥					सतनाम
	1					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४			
सतनाम			जोतिहिं ब्रह्मा विष्णु हहिं, शंकर योगी ध्यान।		सतनाम	
			सत पुरुष छपलोक हहिं, ताकर सकल जहान॥			
			चौपाई			
सतनाम			रामे ज्योति और नहिं कोई। कृष्ण रूप धरे पुनि सोई।२२।		सतनाम	
			ब्रह्मा विष्णु ज्योति औतारा। पुरुष नाम वह रंग करारा।२३।			
सतनाम			छपलोक ले हम चलि आई। साहेब कहा शब्द समुझाई।२४।		सतनाम	
			दीन्ह वचन शब्द का दागी। जगत मांह भया अनुरागी।२५।			
सतनाम			गर्भ बास जब दीन्ह औतारा। जन्म भया देखा संसारा।२६।		सतनाम	
			कुछ दिन बालक रूप चलि गयऊ। कुछ दिन शब्द संशय महं रहेऊ।२७।			
सतनाम			कुछ दिन माया मोह बिस्तारा। कुछ दिन ममिता सभे हमारा।२८।		सतनाम	
			कुछ दिन बीते भयो तब ज्ञाना। कृपा कीन्ह सत साहेब जाना।२९।			
सतनाम			कीन्ह कृपा अति शीतल बानी। प्रेम प्रीति सत सुमिरन ठानी।३०।		सतनाम	
			भयो प्रेम निकलंक बिचारा। गुरुगमि ज्ञान नाम निजु सारा।३१।			
सतनाम			तनिक सम्पूरण कीन्ह अनुसारा। बरते तेज सभ लोक उंजियारा।३२।		सतनाम	
			कहां ले कहों कहा नहिं जाई। ज्ञान दृष्टि मन देखु लगाई।३३।			
			छन्द - ९			
सतनाम			कोटि कामिनि चंवर ढरहिं, कोटि कृष्णा द्वारहीं।		सतनाम	
			कोटि ब्रह्मा वेद भनते, अनन्त बाजा बाजहीं।			
सतनाम			जोति मंडल कोटि कलशा, हिरण्य को प्रकाशहीं।		सतनाम	
			झलक झालरी लागु चहु ओर मोती मणि छवि छावहीं॥			
			सोरठा - ९			
सतनाम			शोभा अगम अपार, हंस बंश सुख पावहीं।		सतनाम	
			कोई ज्ञानी करे विचार, प्रेम तत्व जाके बसे॥			
			चौपाई			
सतनाम			यम जालिम जग करे बेकारा। पाखांड धर्म करे संसारा।३४।		सतनाम	
			जब निजु भेद पावे जन कोई। ताहि देखि चले यम रोई।३५।			
सतनाम			चौदह चौकी यम के होई। बिनु सतगुरु नहिं पहुंचे कोई।३६।		सतनाम	
			चौदह मंत्र भेद जो पावे। जाय छप लोक बहुरि नहिं आवें।३७।			
सतनाम			तांमह सार शब्द है एका। ताहि जानहु निज काया बिलोका।३८।		सतनाम	
			काया परिचै निजु कहों बुझाई गुरु मि ज्ञान बुझो चितलाई।३९।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	छव चक्र तहं मनि उजियारा। अझर झरे तहं जोति निजुसारा।४२।	सतनाम	छव चक्र तहं परिचै पावे। मूल चक्र दृढ़ आसन लावे।४३।	सतनाम	पाँच तत्व तहं देखु विशोषा। पल-पल करहिं अनुपम भोषा।४४।	सतनाम
सतनाम	तामह निरति सुरति की बानी। तामे निरखु माया की खानी।४५।	सतनाम	पचीस प्रकृति तहं निरति कराई। दशवें द्वार रहे वोय जाई।४६।	सतनाम	मूल शब्द मणि मानिक देखा। निरति करें तहं ताल विशोषा।४७।	सतनाम
सतनाम	पचीस प्रकृति के भेद कहि दीजे। होय गुरु ज्ञान बुझि यह लीजै।४८।	सतनाम	पचीसो के यह कथा सुनाई। तामे सार पवन हे भाई।४९।	सतनाम	इँगला पिंगला सुखामनि नारी। सार पौन तंह करे पुकारी।५०।	सतनाम
सतनाम	वोही पवन षट चक्रहिं छेदा। होय गुरु ज्ञान बुझो यह भेदा।५१।	सतनाम	ता त्रिकुटी महं रहा समाई। तहवां काल सके नहिं जाई।५२।	सतनाम	अजपा जपे सूर चन्द ज्ञानी। दरिया गगन वरीषे पानी।५३।	सतनाम
सतनाम	अमृत बुन्द तहां झरि लावे। पियत हंस अमर पद पावे।५४।					
सतनाम	साखी - ५					
सतनाम	अमी तत्व घर अमृत पीवे, देखो सुरति लगाय।					
सतनाम	कहत सुनत किमि बनि परे, जौं गति काहु लखाय॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	नाम बाण जब हृदये लागा। निफरि निरन्तर सूरति जागा।५५।	सतनाम	कोटि तीर्थ तहं जल परगासा। कोटि इन्द्र मेघ धन बासा।५६।	सतनाम	कोटिन तेज जोति परगासा। कोटिन पंडित वेद नेवासा।५७।	सतनाम
सतनाम	छन्द - २					
सतनाम	कोटि ज्ञानी ज्ञान गावहिं, शब्द बिना नहिं बाचहीं।					
सतनाम	शब्द सजीवन मूल ऐनक, अजपा दर्श देखावहीं॥					
सतनाम	सत शब्द सन्तोष धरि धरि, प्रेम मंगल गावहीं।					
सतनाम	मिलहीं सतगुरु शब्द पावहिं, फेरि नहिं भव जल आवहीं॥					
सतनाम	सोरठा - २					
सतनाम	ज्ञान रतन की खानि, मनि मानिक दीपक बरे।					
सतनाम	शब्द सजीवनि जानि, अमरपुर अमृत पिवे॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	एक पवन जब गगन समाई, पियत प्रेम अमर होय जाई।५८।	सतनाम	सत साहब दरियहि समुझाई, जाय छपलोक बहुरि नहिं आई।५९।	सतनाम		सतनाम

3

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
प्रेम प्याला पिवे जन कोई, बिना शीश का चीन्हे सोई।६०।	सकल जीवन कह खाय चोराई, जिन नहिं नाम परम पद पाई।६१।	साखी - ६	प्रेम प्रीति लगाई के, सत्ते शब्द आधार।	सत्त बिना नहिं बांचिहो, नर कोटिन करो व्यापार॥	चौपाई	सत शब्द विचारे कोई। अभय लोक सिधारे सोई।६२।
अभय निशान ध्वनि तहां होई। अजर अमर पद पावे सोई।६३।	कहन सुनन किम करि बनि आवे। सत्तनाम निजु परिवे पावे॥६४।	लीजे निरखि भेद निजु सारा। समुझि परे तब उतरे पारा।६५।	कंचन डाहे पावक महं जाई। ऐसे तन के डाहहु भाई।६६।	जौ हीरा धन सहे धनेरा। होय हिरम्मर बहुरि न फेरा।६७।	गहे मूल तब निर्मल बानी। दरिया दिल बिच सुरति समानी।६८।	पारस शब्द कहा समुझाई। सतगुरु मिलहिं तब देहि देखाई।६९।
सतगुरु सोई जो सत्त चलावै। हंस वोधि छप लोक पठावे।७०।	धार-धार ज्ञान कथे विस्तारा। सो नहिं पहुंचे लोक हमारा।७१।	एक नाम प्रेम लौ लावे। सन्त साधु का दर्शन पावे।७२।	पावे दर्श मुक्ति का भेवा। सुजस निरखि करे निजु सेवा।७३।	साखी - ७	सुमति चीन्हे सो बावरा, कुमति चीन्हे सो पूर।	चीन्हे बिना जग जात हैं, जड़ मूरख ज्यों क्रूर॥
चौपाई	आपे साँच साँच है सोई। झूठा यह जग जात बिगोई।७४।	सत पुरुष महिमा उजियारा। कोटिन सूर्य तेहि सिर पद वारा।७५।	कोटिन कामिनि निरति कराई। कोटिन हीरा सेज बिछाई।७६।	ताहि साबह के चरण मनावों। भेद निरखि निज निर्गुण गावों।७७।	जब छूटे यह जग के भटका। यम जगाति सभे यह फटका।७८।	कैसे हंसा पहुँचे जाई। यम जगाति दुर्ग है भाई।७९।
यम जगाति दुर्ग बंटवारा। मारि जीव सब करे अहारा।८०।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चौदह	मंत्र	बान	संधाना।	मारहु	यम	के पद निर्वाना।८१।
चौदह	मंत्र	भेद	बिस्तारा।	एक	शब्द	ते हंस उबारा।८२।
कामिनि	कनक	फन्द	यम जाला।	चौदह	चीन्हे	कर्म का काला।८३।
शिष्य	शब्द	तुम	करो विचारा।	लोक	वेद	त्यागो सब भारा।८४।
त्यागहु	संशय	यम	कर द्वन्दा।	समुझि	परी	तब भवजल फन्दा।८५।
साखी - ८						
दरिया शब्द विचारिये, तीनि लोक से न्यार।						
गुरु ते भर्म जनि राखहुं, मिलहिं शब्द निजु सार॥						
चौपाई						
सतगुरु	जानि	के	बन्दों	पाऊं।	भर्म	त्यागि तब हृदय लगाऊं।८६।
,सतगुरु	से	सूझि	परे	वह	देशा।	प्रेम सुखी तब पाउ सन्देशा।८७।
आदि	अन्त	जब	पूछे	आई।	छप	लोक कहों समुझाई।८८।
राह	देखाय	दृढ़	करुं	ज्ञाना।	यम	के मान मरदि धरु ध्याना।८९।
डार	पताल	सोर	अस्माना।	ताहि	पुरुष	के करो बखाना।९०।
आदि	अन्त	सतपुरुष	अमाना।	ब्रह्म	एक	है सब घट जाना।९१।
तीनि	लोक	यम	दारुण	अहई।	चौथा	लोक पुरुष वोय रहई।९२।
अजर	अमर	हंस	तहं	होई।	अमृत	झरि चाखे सब कोई।९३।
सो	सुख	मुख	नहिं	जात	बखानी।	बूझे सो जो निर्मल ज्ञानी।९४।
सत	लोक	सत	का	बंधा।	बिनु	सतगुरु जस जड़मति अंधा।९५।
छन्द - ३						
श्वेत मंडल श्वेत चहुं ओर, श्वेत छत्र बिराजहीं।						
श्वेत तख्त पर आपु बैटे, हंस चंवर डोलावहीं॥						
प्रेम आनन्द सुगंध सुन्दर, प्रेम मंगल गावहीं॥						
परिमल अग्र गुलाब की झरि, हंस सो सुख पावहीं॥						
सोरठा - ३						
अति शोभा सुख सार, प्रेम पन्थ भव रहित है।						
कोई ज्ञानी करे बिचार, अटल अमर सुखहंस है॥						
5						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सतगुरु जानु	सत सुख बानी।	शब्द साच विरला कोई मानी।६६।	सतनाम		
सतनाम	मिनती करों	दूनों कर जोरी।	सत साहब ज्ञान की डोरी।६७।	सतनाम		
सतनाम	मनही में माला	प्रेम रस भीना।	सुरति चीन्हि शब्द लवलीना।६८।	सतनाम		
सतनाम	साच शब्द बूझो	चित लाई।	हंस बोधि छप लोक पठाई।६९।	सतनाम		
सतनाम	बूझो दिल मनि	आपन खोली।	सत्य लोक सत्या नहिं डोली।७०।	सतनाम		
सतनाम	यह कुल कर्म	छोड़ि सब देहू।	सतगुरु चरण शब्द तब लेहू।७१।	सतनाम		
सतनाम	अमृत प्रेम पियहु	तुम दासा।	तन छूटे छप लोकहिं वासा।७२।	सतनाम		
सतनाम	जब पाँजी पर	पहुंचे जाई।	मागे मोहर देई देखाई।७३।	सतनाम		
सतनाम	सतगुरु छपा	देखि रहे सकुचाई।	गावहिं मंगल कामिनी आई।७४।	सतनाम		
सतनाम	बहुत आनन्द सुख	भौ बेलासा।	जरा मरन मेटा भव त्रासा।७५।	सतनाम		
सतनाम	कोटिन कला तहं	देखो जाई।	चलत फिरत सुख बहुत सोहाई।७६।	सतनाम		
सतनाम	हंस रूप देखि	रहा लोभाई।	अमृत बैन रहा छबि छाई।७७।	सतनाम		
सतनाम	अति आनन्द सुख	बरनि न जाई।	अमरपुर अमृत रस पाई।७८।	सतनाम		
सतनाम	कोटिन कामिनि	मंगल गावें।	हीरा मानिक सेज बिछावें।७९।	सतनाम		
सतनाम	चंवर डोलावहिं	बहु विधि भांति।	सभ हंसा बैठे एक पांति।८०।	सतनाम		
सतनाम		साखी - ६		सतनाम		
सतनाम		अगम पंथ की खेलि यह, बूझे विरला कोय।		सतनाम		
सतनाम		सत साहब सामर्थ हैं, दरिया शब्द बिलोय।।		सतनाम		
सतनाम		चौपाई		सतनाम		
सतनाम	भेद निरखि लेहु	सो निजु सारा।	चांदी जारि हुआ टकसारा।१११।	सतनाम		
सतनाम	खोटा कांजी दूरि	करि दीन्हा।	असल ज्ञान निजु परिचै लीन्हा।११२।	सतनाम		
सतनाम	साहब परिचे	दीन्ह देखाई।	शब्द भेद निजु कहों बुझाई।११३।	सतनाम		
सतनाम	सतगुरु गुरु की	रहनि निनारा।	मिले शब्द पावे निजु सारा।११४।	सतनाम		
सतनाम	चौ युग चारि जो	कीन्ह निमेरा।	जो बूझे सो पहुँच सबेरा।११५।	सतनाम		
सतनाम	तीनि लोक यम	जालिम घोरा।	मुनि पंडित भौ यम के चेरा।११६।	सतनाम		
सतनाम	सत पुरुष छप	लोके डेरा।	काया कबीर करहिं जग फेरा।११७।	सतनाम		
सतनाम	अभय लोक जहां	भय नहिं होई।	अमृत प्रेम पिवे सब कोई।११८।	सतनाम		
सतनाम	जाहि लोक ले	हम चलि आई।	ताहि लोक बिरला जन जाई।११९।	सतनाम		
सतनाम	ज्ञान कथि जनि	भूले कोई।	शब्द विचार करहिं नर लोई।१२०।	सतनाम		
सतनाम				सतनाम		

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मोहिं से पुछहुं ज्ञान करारा। आदि अन्त कहों बिस्तारा।१२१।	सतनाम	तीन लोक वेद यह कहई। चौथा लोक पुरुष वोय रहई।१२२।	सतनाम	अजर अमर लोक बिस्तारा। यह सब किरतम कीन्ह पसारा।१२३।	सतनाम
सतनाम	हरि भक्तन भक्ताई कीन्हा। त्रिगुण फन्द तेहु नहिं चीन्हा।१२४।	सतनाम	त्रिगुण ते है वह गुन न्यारा। अजर अमर सत्त कर्तारा।१२५।	सतनाम	हंस बंस तहें पहुँचे जाई। अजर अमर तहाँ होय जाई।१२६।	सतनाम
सतनाम	सत्त शब्द जो करे विवेखा। आदि अन्त काया मंह देखा।१२७।	सतनाम	सत शब्द बुझो चित लाई। सो हंसा निर्मल होई जाई।१२८।	सतनाम	अमर लोक पहुँचहिं दासा। देखाहि अविगति अजब तमाशा।१२९।	सतनाम
सतनाम	छन्द - ४					सतनाम
सतनाम	कोटि कंचन दान दे, काटिन कथा पुरान।					सतनाम
सतनाम	कोटि तीर्थ जौं पगु फिरे, तो ना तुले गुरु ज्ञानं॥					सतनाम
सतनाम	अनन्त नाम सब कहत हैं, एक नाम पर नामं।					सतनाम
सतनाम	एक नाम वोए पुरुष का, ताहि खोजु निजु धामं॥					सतनाम
सतनाम	सोरठा - ४					सतनाम
सतनाम	एक सो अनन्त भौ, सो फूटी डार विस्तार।					सतनाम
सतनाम	अन्तहु फिर एक है, ताहि खोजु निजु सार॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	सतगुरु शब्दहीं मानु सुभागा। निर्मल हो मल कबहिं न लागा।१३०।	सतनाम	गर्व गुमान भुले सभ ज्ञानी। विद्या बेद पढ़ि भर्म न जानी।१३१।	सतनाम	मोटा मन करि फिरे गवांरा। जौ मन मिले मिले कर्तारा।१३२।	सतनाम
सतनाम	पानी पौनहु ते मन तेजा। जहाँ कहो तहवाँ मन भोजा।१३३।	सतनाम	सो मन मीलेव दरिया दासा। शब्द देखि मेटा यम त्रासा।१३४।	सतनाम	तीनि लोक तीनि गुण फैलाई। चौथा लोक निर्गुण ले जाई।१३५।	सतनाम
सतनाम	तीनि लोक तो बेद बखाना। चौथा लोक के मर्म न जाना।१३६।	सतनाम	जोतिहिं ब्रह्मा विष्णु प्रतिपाला। जोति रूप धरि रहे गोपाला।१३७।	सतनाम	पुरुष न होंहि आपु औतारा। गाढ़े जोति करे उजियारा।१३८।	सतनाम
सतनाम	वह तो सत पुरुष स्थाना। चौथा लोक जहं भौ नहिं जाना।१३९।	सतनाम				
सतनाम	7					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ११			
सतनाम			अष्ट दल कमल भंवर तहं गूंजे, देखहु शब्द विचारि। कहें दरिया चित चेतहु, देहु भर्म सब डारि॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			मूल शब्द ध्वनि होत अंजोरा। सुरति साधि राखे एक ठौरा।१६५।		सतनाम	
			सुरति डोरी चेतो चित लाई। मूल शब्द की यही उपाई।१६६।			
			सूर चन्द एक धर आवे। तबहीं डोरी ले बिलमावे।१६७।			
सतनाम			मूल शब्द ध्वनि होत उचारा। तहवाँ जाई करो पैसारा।१६८।		सतनाम	
			अकह कमल के ऊपर मूला। सहस्र कमल तहवां रहु फूला।१६९।			
			परिमल उग्र वास तहं आवे। हंसा पियत बहुत सुख पावे।१७०।			
सतनाम			होय दास सतगुरु के पासा। सेवा भक्ति प्रेम परगासा।१७१।		सतनाम	
			मैं तो साहब तुम कह जाना। मेरो मन तुमसे मन माना।१७२।			
			भर्म छुटे सो करो उपाई। जाहि से हंस छपलोकहिं जाई।१७३।			
सतनाम			सुरति लगाई के करो सम्हारा कुल कर्म छोड़ो ब्यौहारा।१७४।		सतनाम	
			जो सत शब्दहिं करे विचारा। सो हंसा भव सिन्धु उबारा।१७५।			
			अकह बात कहि नहीं जाई। अगम गमि तहं सुरति लगाई।१७६।			
सतनाम			छन्द - ५		सतनाम	
			आगे मार्ग झीन अति है, शब्द सुरति विचारहीं।			
			अजर जोति अनूप बानी, देखि तहां सुख पावहीं॥			
सतनाम			अगम गमि तहं ज्योति झलाझलि, नेकु मन ठहरावहीं।		सतनाम	
			सत सुकृत के सीढ़ी पगु दे, अमृत फल तंह चाखहीं॥			
			सोरठा - ५			
सतनाम			अजरा ज्योति बराय, मूल शब्द निजु सार है।		सतनाम	
			गहो सुरति चितलाय, कहें दरिया भव रहित है॥			
			चौपाई			
सतनाम			अगम सुरति चेतहु चित लाई। सुरति कमल रहु सुरति लगाई।१७७।		सतनाम	
			चकमक चित चुभुकि जब लागे। निर्मल जोति प्रेम तहं जागे।१७८।			
			गहिर ज्ञान निजु करे बिचारा। झलके पद्म होय उजियारा।१७९।			
सतनाम			अगम कथा बहुते हम कहिया। धरती अकाश रचित यह जहिया।१८०।		सतनाम	
			9			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जग में आय कहेव सत बाता। प्रेम युक्ति बिरला जन राता।१८१।	सतनाम	बीरा देई तब हंस मुक्ताई। मूल शब्द बिरला कोई पाई।१८२।	सतनाम	यह बीरा पाय सत्त जो गहई। सो हंसा भव सागर तरई।१८३।	सतनाम
सतनाम	निजु गहि सुरति लगावहु भाई। सोऽहं ठीका मांह समाई।१८४।	सतनाम	ठीका आगे है गा मूला। प्रेम शब्द जहवां स्थूला।१८५।	सतनाम	स्वेत ध्वजा निसिदिन फहराई। अमृत झरि तहं बहुत सोहाई।१८६।	सतनाम
सतनाम	हीरा मानिक है परगासा। शंखानि मनि रहे चहुँ पासा।१८७।	सतनाम	ऐसो निजु है लोक नेवासा। झरे गुलाब मुख अमृत बासा।१८८।	सतनाम	अमी तत्व सुरति लव लावे। सहजे लोक पयाना पावे।१८९।	सतनाम
सतनाम	शीतल शब्द निजु प्रेम बढ़ावे। सन्त साधु का सेवा लावे।१९०।	सतनाम	चोर साहु चिन्हें चितलाई। ताहि से प्रेम करब कछु भाई।१९१।	सतनाम	गुंगा गहिरा ज्ञान बिचारा। दिव्य दृष्टि का करो अनुसारा।१९२।	सतनाम
सतनाम	<p>सांखी - १२</p> <p>ज्ञान दृष्टि दीपक बरे, कहल जो मानु हमार।</p> <p>दरिया गुरु दरियाव हैं, समुझि देखु एक बार॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	तीन युग जब जाय ओराई। तेहि पीछे कलियुग चलि आई।१९३।	सतनाम	तब सुकृत कहं आनि बोलाई। साहब बचन कहा समुझाई।१९४।	सतनाम	कहहीं पुरुष सुनो हो दासा। जीव सब बिनसहिं यम के त्रासा।१९५।	सतनाम
सतनाम	नष्ट युग होइहें बिस्तारा। सभ जीवन उन्हि करहिं अहारा।१९६।	सतनाम	पहिले बिनसे मृत्युलोक की माया। धर्म छुटे तब बिनसे काया।१९७।	सतनाम	बिनसे रूप जो धरे शरीरा। बिनसहिं योद्धा बड़-बड़ बीरा।१९८।	सतनाम
सतनाम	कहें पुरुष सुनो चितलाई। जीव बाँचे की कौन उपाई।१९९।	सतनाम	शब्द एक मैं कहों बुझाई। जग रक्षा हो यही उपाई।२००।	सतनाम	अंश हमार वहां चलि जाई। जीव बाँचे की यही उपाई।२०१।	सतनाम
सतनाम	सुकृत जाय लेहु औतारा। हंस बोधि छप लोक सिधारा।२०२।	सतनाम	लेहु सुकृत तुम सत की बानी। सत न होंखे यमपुर हानी।२०३।	सतनाम	कठिन काल देश अरियारा। सत शब्द सन्तोष बिचारा।२०४।	सतनाम
सतनाम	ज्ञान गमि जेहि होखे परानी। कबहिं न होखे यमपुर हानी।२०५।	सतनाम	जे मोहि जाने तेहि मो जाना। ताहि सन्त के करो बखाना।२०६।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सत	शब्द जिन्हि केवल जाना। अभय लोक सो सन्तु समाना।२०७।	सोई रहिहैं हमरे पासा। सन्त पिवे अमृत रस दासा।२०८।	ताहि राखे की बहुत उपाई। अमर होय बिनसे नहीं पाई।२०९।	कहे पुरुष विरला केहु जाना। मुक्ति पंथ सन्तन्ह पहिचाना।२१०।	अमृत नाम निजु करो विचारा। अमर लोक ताकर पैसारा।२११।
सतनाम	जो	स्वप्ने निन्दा नहिं कीन्हा। ध्यान लगाय रहे लवलीन्हा।२१२।	जीव जन्तु एक सम जाने। एके ब्रह्म सभो पहचाने।२१३।	आतम घात कबहिं नहिं कीन्हा। आतम पुजि रहे लवलीना।२१४।	निसु वासर जो ध्यान लागाई। सतनाम दूजा नहिं गाई।२१५।	
सतनाम		साखी - १३				
सतनाम		सत्तनाम निजु सार है, अमर लोक ले जाय। कहे दरिया सतगुरू मिलें, संशय सकल मेढाय॥				
सतनाम		चौपाई				
सतनाम	सतनाम	है निर्गुण अधारा। ताके काल न करे अहारा।२१६।	इन्द्र लोक इन्द्र वोय रहई। तिनहूं के काल विगुरचन करई।२१७।	ब्रह्म लोक ब्रह्मा अस्थाना। तिन्हहु के काल करे पिसिमाना।२१८।	एक निरंजन सभहि झुलावे। विनु चीन्हे कोई मुक्ति न पावे।२१९।	झूठी बात जनि जाने कोई। शब्द विचार करहिं नर लोई।२२०।
सतनाम	मृत्यु	अन्ध प्रलय जब करई। नाम हिरम्मर ते जग तरई।२२१।	छपलोक ले हम चलि आई। सार शब्द गहे सुखा पाई।२२२।	जो निन्दा सहिहें संसारा। सो निजु गहिहें शब्द हमारा।२२३।	सहे निन्दा निर्मल हो अंगा। काल प्रचण्ड अपने हो भंगा।२२४।	नाद विन्द दो बंश हमारा। सत गहे सो उतरे पारा।२२५।
सतनाम	माया	तेजि शब्द लौ लावे। ताके माथ जगत सब नावे।२२६।	अदल चलावे यहि संसारा। सो निजु होइहें बंश हमारा।२२७।	साखी - १४		
सतनाम	जो	जन फन्दे नारि से, सो नहिं बंश हमारा।	वंश राखि नारि जो त्यागे, सो उतरे भव पार॥	माया चेरी है संत की, जो बूझे निजु सार।	ज्यों आवे त्यों खर्चे, अदल चले संसार॥	माला टोपी भेष नहीं, नहीं सोना शृंगार।
सतनाम	सदा	भाव सत्संग है, जो कोई गहे करार॥				

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	धन्य जीवन ताको है ज्ञाना। पुरुष पुरान जिनि सुमिरन ठाना।२२८।	सतनाम	सोई सन्त होइहहीं निर्वानी। नीर क्षीर बिवरन करि आनी।२२९।	सतनाम	हंस दशा निर्मल सुखा पावे। रहे अबोल ज्ञान लौ लावे।२३०।	सतनाम
सतनाम	मीन पंथ साधु गहु ज्ञानी। ऐसे मन की प्रतिमा जानी।२३१।	सतनाम	आवत जात करे पहचानी। पूरन पद है निर्गुण बानी।२३२।	सतनाम	पावे भेद शब्द निजु सारा। छपलोक के राह सुधारा।२३३।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु ज्ञान जबे होय जाई। दर्शन देखि संशय मेटि जाई।२३४।	सतनाम	साखी - १५	सतनाम	मेटे संशय सत शब्द से, जौं गुरु मिले करार।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु बिना पार नहीं, भर्मि रहा संसार	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतगुरु सत शब्द भरिपूरा। निर्मल शरीर मेटे सभ पीरा।२३५।	सतनाम
सतनाम	धर्म राय निकट नहिं आवे। जाय छपलोक आमृत फल पावे।२३६।	सतनाम	ऐसन गुरु जौं मिलेव आई। तब हंसा छप लोकहिं जाई।२३७।	सतनाम	जाय छपलोक जहं पुरुष अमाना। अक्षै तब जहं स्वेत निशाना।२३८।	सतनाम
सतनाम	काया परिचै मूल जब पावे। अविगति ज्योति दृष्टि में आवे।२३९।	सतनाम	हीरा एक त्रिकुटी महं होई। हीरा ध्यान धरहिं नर लोई।२४०।	सतनाम	हीरा मध्य एक पेड़ विस्तारा। योगी ज्ञान जो करे विचारा।२४१।	सतनाम
सतनाम	ताला कुंजी लागु केवारा। चोर न मूसे ज्ञान रखवारा।२४२।	सतनाम	ताको कहिये ज्ञान गम्भीरा। त्रिकुटी मध्य परखो जो हीरा।२४३।	सतनाम	ताके योग यह जगत बखाना। जाके गगन मंडल स्थाना।२४४।	सतनाम
सतनाम	सार शब्द नहीं करे बखाना। वह योगी नहिं ज्ञान समाना।२४५।	सतनाम	मौन साधि जो बैठे कोई। कैसे जगत बूझे नर लोई।२४६।	सतनाम	सार शब्द का करो पुकारा। राह देखाय करो निरुवारा।२४७।	सतनाम
सतनाम	ताको शब्द सांच है ज्ञाना। जाके तन ना क्रोध समाना।२४८।	सतनाम	पंडित क्रोध कीन्ह विस्तारा। तिनहुं ते हरि रहे निरारा।२४९।	सतनाम	जाति-पांति कुछ गर्व न करिये। सत्तनाम निजु हृदये धरिये।२५०।	सतनाम
सतनाम	साखी - १६	सतनाम	सतनाम निजु सार हे, सन्तो करो विचार।	सतनाम	जौं दरिया गुरु गहिर है, तौ मिले शब्द निजुसार।।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सतगुरु चरण प्रेम रस माता। सींचेव द्रुम सुगंध सुपाता।२५१।	सतनाम	हौं सेवक युग-युग तुम्हारा। क्रिपा करहु जनि लावहु बारा।२५२।	सतनाम	हुक्म चरण तब सिर पर लीन्हा। भक्ति भाव निजु हृदये चीन्हा।२५३।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	छन्द - ६	सतनाम		सतनाम
			सुख साज सम्पति काज नहिं, तेजु द्रोह द्रोही नन्दनं।			
सतनाम		सतनाम	भव भाज काज न राज कामहिं, बबसि न निजुपुर जैसनं॥	सतनाम		सतनाम
			अन बानी तेजु तैं जड़, असल रंग सतनामहीं।			
सतनाम		सतनाम	कै कैट काई न लागु तामें, मोर चोर न पावहीं॥	सतनाम		सतनाम
			सोरठा - ६			
सतनाम		सतनाम	थाके मुनिवर लोय, सार शब्द संसार में।	सतनाम		सतनाम
			कोई ज्ञानी करे बिलोय, ज्ञान रतन जबहीं मिले॥			
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
			मन के फन्द पड़ा संसारा। जाल मीन जीव करे अहारा।२५४।			
सतनाम		सतनाम	ऐसे काल सकल जीव मारे। उपजनि बिनसनि नरकहिं डारे।२५५।	सतनाम		सतनाम
			किर्तम छोड़ि कर्ता के जाने। तबहीं लोक पयाना ठाने।२५६।			
सतनाम		सतनाम	पावे भेद तब मन के राधे। निरगुण निरखि निरन्तर साधे।२५७।	सतनाम		सतनाम
			साधे योग जौं निर्मल बानी। आतम देव निरंजन जानी।२५८।			
सतनाम		सतनाम	मनसा मालिन मन कहं चीन्हा। होय ज्ञान प्रेम गति भीन्हा।२५९।	सतनाम		सतनाम
			आतम देव पूजहु तुम भाई। का जग पाती तूरहु जाई।२६०।			
सतनाम		सतनाम	पाती तूरे निर्गुण नहिं पाई। आतम जीव घात इन लाई।२६१।	सतनाम		सतनाम
			आतम दर्श ज्ञान जब जाने। तबहीं लोक पयाना ठाने।२६२।			
सतनाम		सतनाम	साखी - १७	सतनाम		सतनाम
			पर आतम के पूजते, निर्मल नाम अधार।			
सतनाम		सतनाम	पंडित पत्थर पूजते, भटके यम के द्वार॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम		सतनाम	तन सरवर मन देखु बिचारी। तहां खोजु आतम बनवारी।२६३।	सतनाम		सतनाम
			जाहि खोजत सुर नर मुनि हारे। अधिक पेड़ डार बिस्तारे।२६४।			
सतनाम		सतनाम	दरिया दास कहा समुझाई। ताहि खोजहु निर्मल होय जाई।२६५।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	13	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ताहि खोजहु भेद निजु सारा। मूल छोड़ि जनि गहहू डारा।२६६।	दरिया भव जल अगम अपारा। सत साहब शब्द निजु सारा।२६७।	बोलहिं सतगुरु ज्ञान गम्भीरा। गुरु गम ज्ञान जपहु निजु हीरा।२६८।	जाय छप लोक सुरति लवलीन्हा। पुरुष पुरान नाम गति चिन्हा।२६९।	कर जोरि हंस करहिं सुख चैना। पुरुष पुरान बोलहिं निजु बैना।२७०।	चलत फिरत पुनि बहुत सोहाई। ऐसे एक कल्प बिति जाई।२७१।	तखत एक तहं अजब बनाई। छवि निरखत हंस रहा लोभाई।२७२।
ऐसन रूप कहा नहिं जाई। करि करि जोति रहा छबि छाई।२७३।	अभय निशान ध्वनि तहां होई। अजर अमर पद पावे सोई।२७४।	साखी - १८	जोति मंडल रवि कोटि हैं, को करि सके बखान।	दरिया पदहिं बिचारिये, ब्रह्म रूप को ज्ञान॥	चौपाई	निर्गुण की गति अलखा लखाई। जाके सत्ता सामर्थ सहाई।२७५।
शीतल शब्द साधु की बानी। दरिया दिल बिच सुरति समानी।२७६।	जब सतगुरु से परिचय पाई। भव जल के सब संशय मेटाई।२७७।	बोलहिं सतगुरु ज्ञान गम्भीरा। दरिया समुझि लेहु तुम बीरा।२७८।	जो जो हंसा बोधो जाई। सो सो हंसा पहुंचे आई।२७९।	साखी - १९	पहुंचे हंसा सत शब्द से, सतगुरु मिले जो मीत।	कहें दरिया भव भर्म तेजो, बसे चर्ण मंह चीत॥
चौपाई	सत्तनाम विचारे कोई। अजर अमर पद पावे सोई।२८०।	एक अक्षर शुद्ध करु भाई। अक्षर मांह निःअक्षर पाई।२८१।	निःजानु अक्षर यंत्र से घीचा। शब्द के बाने यम भव नीचा।२८२।	निःअक्षर पडित करो बिचारा। देखों वेद निजु सुरति तुम्हारा।२८३।	बादि न मिले निर्मल ज्ञाना। बादि करे सो यमपुर जाना।२८४।	बादि तेजु शीतल गहु धीरा। तब मिलिहैं अनुपम हीरा।२८५।
जब छुटिहें मन का विस्तारा। तब पैहो शब्द निजु सारा।२८६।	यह बड़े नहिं होय बड़ाई। पत्थर पूजि जौ तिलक बनाई।२८७।	14	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सब घट ब्रह्म और नहिं दूजा। आतम देव का निर्मल पूजा।२८८।	सतनाम	सत्तनाम है निर्मल बानी। ताके खोजहु पंडित ज्ञानी।२८९।	सतनाम	साखी - २०	सतनाम
सतनाम	मेरे कहै नहिं मानहु पंडित, यह नहिं होय प्रनाम।	सतनाम	योग जुगुति जहां न देखहु, हंस कहां विश्राम॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जाहि खोजत सुर नर मुनि हारे। बोलहु पंडित बचन बिचारे।२९०।	सतनाम	बचन कठोर बोलहु जनि बैना। ए नहिं मिलिहै पुरुष अमैना।२९१।	सतनाम	शीतल शब्द जो करहू अपाना। सार शब्द तब मिलिहिं निदाना।२९२।	सतनाम
सतनाम	बादिहिं जन्म गया शठ तोरा। अन्त की बात किये तैं भोरा।२९३।	सतनाम	पढ़ि-पढ़ि पोथी भया अभिमानी। जगत औरी सब मिथ्या बखानी।२९४।	सतनाम	साखी - २१	सतनाम
सतनाम	कोठा महल अटारिया, सुने श्रवण बहु राग।	सतनाम	सतगुरु शब्द चीन्हे बिना, जौं पक्षिन में काग॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जौं नहिं जानहु छपलोक के मर्मा। हंस न पहुंचे यह षट् कर्मा।२९५।	सतनाम	सार शब्द जब दृढ़ता लावे। तब सतगुरु कछु आप लखावे।२९६।	सतनाम	दरिया कहहीं शब्द निर्वाना। औरी कहों नहिं वेद बखाना।२९७।	सतनाम
सतनाम	वेदे अरुझि रहा संसारा। फेरि-फेरि होय गर्भ औतारा।२९८।	सतनाम	चारि चरण सींघ दुई होइहें। योनि संकट चौरासी जैहें।२९९।	सतनाम	साखी - २२	सतनाम
सतनाम	चौरासी के भवन में, कल्प कोटि बहि जाय।	सतनाम	ज्ञान बिना नहिं बांचिहो, फेरि-फेरि भटका खाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	सतनाम निजु करो निमेरा। जौ चाहो छप लोकहिं डेरा।३००।	सतनाम	सत शब्द नहिं मानहिं बानी। जोति स्थापि रहे सभ ज्ञानी।३०१।	सतनाम	जोति पुरुष की कामिनि अहई। बिना पुरुष कामिनि नहिं लहई।३०२।	सतनाम
सतनाम	एकर अर्थ सुनावहु कही। पुरुष बिना कामिनि नहिं लही।३०३।	सतनाम	कामिनि भक्ति सभे जग जाना। पुरुष ज्ञान निर्लेप बखाना।३०४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ज्ञान काहु के नावे न माथा। जो जन बूझे सो होय सनाथा।३०५।	सर्व ज्ञान बखानो तोहीं। एकर अर्थ सुनावहु मोहीं।३०६।	बंक नाल कौने घर बासा। कौन पवन जोति परगासा।३०७।	छह चक्र के कहिये भेदा। अष्ट दल कमल के करहु निखेधा।३०८।	सार पवन के कहिये भेदा। कौन पवन षट चक्रहिं छेदा।३०९।	अष्ट दल कमल रंग है भीना। तामे कौन सुरति लवलीना।३१०।	कहवां बोलता प्रेम अधारा। कौन शब्द ते हंस उबारा।३११।
एकर भेद कहो तुम आई। कहें दरिया करु योग दृढ़ाई।३१२।	एकर भेद नहीं तुम जाना। पंडित पढ़ि के वेद पुराना।३१३।	एकर भेद पूछहु तुम मोंही। एकर अर्थ सुनावों तोंही।३१४।	साखी - २३			
कौन घरा वोय हंस है, कौन घरा वोय नाम।						
कौन घरा वोय जोति है, कौन सुरती निजु धाम॥						
अग्र घरा वोय हंस है, मनि मुक्तावलि नाम।						
अजर अनुपम जोति है, कमल सुरति निजु धाम॥						
चौपाई						
पंडित नाम अजहूं नहिं चिन्हा। सुरति लगाय रहे लौ लिन्हा।३१५।	चिन्हहु पंडित शब्द निर्वाना। निर्गुण नाहीं चिन्हहु अज्ञाना।३१६।	मूल चक्र निजु हीरा खानी। अष्टदल कमल रहु निर्मल बानी।३१७।	छप लोक सत वोय ज्ञानी। जगमग जोति तहां निरमल बानी।३१८।	मुक्ति पदारथ सतगुरु दाता। योग बिराग प्रेम रस माता।३१९।	काया अग्र दृष्टि स्थाना। अगम निगम खबरि जो जाना।३२०।	बाके योगी जगत बखाना। जाके गगन मंडल स्थाना।३२१।
मनही में माला प्रेम रस भिन्हा। पंडित सो जो शब्दहिं चिन्हा।३२२।	सतगुरु बिना करहिं जीव हानी। कहें दरिया तेजु चतुर सयानी।३२३।	सतगुरु की गति अगम अपारा। खोजि देखहु शब्द निजु सारा।३२४।	साखी - २४			
ज्ञान सम्पूरण प्रेम रस, बिबरन करो विचारि।						
हंस बंस सुख पावहिं, भव जल जाहि न हारि॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

16

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	छह आठ के पावे भेदा। तब निजु करिहें शब्द निखोदा।३२५।	सतनाम	निरंजन चीन्हि करहिं सुख चैना। बिनु चीन्हें नहिं शीतल बैना।३२६।	सतनाम	चीन्हहुं वेद कहां ते आया। आदि चीन्हहुं प्रेम पद पाया।३२७।	सतनाम
सतनाम	कहां ते जोति निरंजन राई। जे रचा तेहिं चीन्हहुं भाई।३२८।	सतनाम	समुझि परिहें शब्द निजु सारा। मिला ज्ञान होय निस्तारा।३२९।	सतनाम	झूठ कहन सभे हितकारी। साच कहत नर पारे गारी।३३०।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - २५	सतनाम		सतनाम
			जहां साच तहं आपु हैं, निशदिन होहु सहाय।			
			पल पल मनहिं बिलोइये, मीठो मोल बिकाय॥			
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	वेदे कहि थाके ब्रह्मा बेचारा। नाहीं मिले सिरनजि हारा।३३१।	सतनाम	योगी योग करत सभ हारे। औरि कतेको तन के जारे।३३२।	सतनाम	तपे और संन्यासी हारे। चुंडित मुंडित करे विचारे।३३३।	सतनाम
सतनाम	जंगम योगी रहे सभ हारी। एक नाम निजु शब्द पुकारी।३३४।	सतनाम	सो ना मनहिं चीन्हे गंवारा। फिरि होय गर्भ औतारा।३३५।	सतनाम	भक्ति बेहूना सो नर जानी। शून्य मशक रहे बिनु पानी।३३६।	सतनाम
सतनाम	ताके जीवन जन्म है साचा। सतनाम प्रेम निजु नाचा।३३७।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
		सतनाम	साखी - २६	सतनाम		सतनाम
			कनक कामिनि के फन्द में, ललचि मन लपटाय।			
			कलपि-कलपि जीव जरत हैं, मिथ्या जन्म गंवाय॥			
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	भुले फिरहीं माया लपटाना। सन्त साधु नहिं गुरु गमी ज्ञाना।३३८।	सतनाम	घटत मूल सब जात ओराई। साच शब्द नहीं हृदये लाई।३३९।	सतनाम	कर्म कागज सभ जात ओराई। जब यमदूत निकट चलि आई।३४०।	सतनाम
सतनाम	सूखत जल पुरइन भौ छीना। मूल घटे पै घट नहिं चीन्हा।३४१।	सतनाम	हंस अकुलाय फिरे दस दीसा। जबहिं दूत भेजा जगदीसा।३४२।	सतनाम	मुख नहिं निकले सत के बैना। ढरि ढरि नीर परे अति नैना।३४३।	सतनाम
सतनाम	ले जगदीश नरक महं डारा। जन्म केते को करे पुकारा।३४४।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	17	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २७			
सतनाम			मातु पिता सुत बान्धवा, सभ मिलि करे पुकार। अकेला हंस चलि जातु है, कोई नहीं संग तुम्हार॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			ऐसे पीछे बहुत भुलाना। जिन्ह नहिं शब्द हमारो माना।३४५।		सतनाम	
			पान परवाना हमारो पाया। रहनि गहनि सत शब्द समाया।३४६।			
सतनाम			जो जो चढ़े हमारी बाहीं। जरव मुक्ताय छप लोके जाहीं।३४७।		सतनाम	
			सत शब्द हम कीन्ह निमेरा। झूठ जाने सो यम का चेरा।३४८।			
			साखी - २८			
सतनाम			शब्द हमारो मानिहो, नर छोड़हु मन विस्तार।		सतनाम	
			सत सुकृत के चीन्हिबे, उतरहु भव जल पार॥			
			चौपाई			
सतनाम			निश्चै नाम जो करे बखाना। मिले प्रेम पद श्रीमुख ज्ञाना।३४९।		सतनाम	
			करनी करि करि नये नशाई। भेद न पाई न नाम सहाई।३५०।			
सतनाम			रहहू सम्हारि नाम लव लाई। नाम बिना नहिं सिद्धि कहाई।३५१।		सतनाम	
			नाम निर्मल के करहू निखोदा। सत शब्द पावे निजु भेदा।३५२।			
सतनाम			सोई सत खोजो दिल लाई। जीवन मुक्त जो जिन्द कहाई।३५३।		सतनाम	
			साखी - २९			
सतनाम			जिन्दा जीवहिं जगत में, देखो शब्द विचारि।		सतनाम	
			अजर अडोल वोय अमर हंही, वचन कहा निरुवारि॥			
			चौपाई			
सतनाम			वोय निर्गुण सगुण ते भीना। जाके प्राण पिंड सभ चीन्हा।३५४।		सतनाम	
			जाके हाथ पांव मुखा बानी। बोलहिं प्रेम सुधा रस सानी।३५५।			
सतनाम			तीनि गुण तो रहित अमाना। प्राणं पिंड जग उदित निशाना।३५६।		सतनाम	
			मरे न जीवे जिन्दा सोई। अक्षय वृक्ष गति जाने कोई।३५७।			
			साखी - ३०			
सतनाम			अक्षय वृक्ष वोय पुरुष हैं, जिन्दा अजर अमान।		सतनाम	
			मुनिवर थाके पंडिता, वेद कथहिं अनुमान॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सो निर्गुण कथि कहे अनाथा। जाके हाथ पांव नहिं माथा।३५८।	सतनाम	निरंकार अंकार बिहूना। रूप रेखा नहिं अहे नमूना।३५९।	सतनाम	भूले पंडित मर्म न जाना। सो कर्ता नहिं सुनेव काना।३६०।	सतनाम
सतनाम	नाना रंग बोलहिं बहुबानी। अरुझे भेष विडम्बना ठानी।३६१।	सतनाम	साखी - ३१	सतनाम	जैसे लता द्रुम में, अरुझि रहा बहुभांति।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु मति जाने बिना, अपनी-अपनी जाति॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सत ब्रह्म जीव मंह लेखो। अद्वैत ब्रह्म आपुहीं पेखो।३६२।	सतनाम
सतनाम	भूला नर सब मूल गंवाई। मूल बिना ज्ञान कहं पाई।३६३।	सतनाम	जीव ब्रह्म का कहों उपाई। खोजो जीव ब्रह्म मिलि जाई।३६४।	सतनाम	घट परिचै जब करे निखेदा। गुरु गमि ज्ञान पावे निजु भेदा।३६५।	सतनाम
सतनाम	चुवे प्रेम मुख आमृत लाई॥ पियत प्रेम हंसा सुख पाई।३६६।	सतनाम	माली फूल आप ले आई। आतम देव के पूजा लाई।३६७।	सतनाम	आतम देव निरंजन राई। बाहर भीतर आपु लखाई।३६८।	सतनाम
सतनाम	मूल फूल भंवरा लपटाई। पियत सुधा मगन होय जाई।३६९।	सतनाम	पचीसो तारी ताल सुनाई। नाचहिं हंसा कौतुक देखाई।३७०।	सतनाम	नौ मिलि एक रूप देखाई। पांच मिलि गुरु पुरा पाई।३७१।	सतनाम
सतनाम	ऐसो सतगुरु की बलि जाई। आदि अन्त सब देहिं देखाई।३७२।	सतनाम	साखी - ३२	सतनाम	सतगुरु ज्ञान दीपक बरे, जौं मन राखे थीर।	सतनाम
सतनाम	कहें दरिया सतगुरु मिले, हरे सकल सब पीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	कहे दरिया जिन्हि केवल जाना। सोई जन साहब पहिचाना।३७३।	सतनाम
सतनाम	सत पुरुष की यह प्रभुताई। काटि पाप जन निजुपुर जाई।३७४।	सतनाम	जब निजु ज्ञान गमि करि पेखे। अविगति जोति दृष्टि महं देखे।३७५।	सतनाम	अनहद की ध्वनि करे विचारा। ब्रह्म दृष्टि होय उंजियारा।३७६।	सतनाम
सतनाम	यह जो कोई गुरु ज्ञानी बूझे। शब्द अनाहद आपुहिं सूझे।३७७।	सतनाम	पंडित सो जो मनहिं बुझावे। मनहिं मन के पूजा चढ़ावे।३७८।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	19	सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	घटहिं में सेली घटही में मुद्रा। घटहिं में पाती फूल एक सुन्द्रा।३७६।	मूरति अनुपम जहं नैन झरोखा। कमल नाल से पवन सुरेखा।३८०।	छण छण होखो अनहद बानी। देखि सरूप मौन रहु ठानी।३८१।	सतगुरु ज्ञानी जो होखो कोई। सतनाम निजु पावे सोई।३८२।	शब्द पावे दृढ़ करि धरई। जाय छप लोक नरक नहिं परई।३८३।		
सतनाम		साखी - ३३					
सतनाम		छप लोक वोय अजर हहिं, जिन्दा कहा बुझाय।					
सतनाम		धोखा धन्धा त्यागि के, शहर अमरपुर जाय॥					
सतनाम		चौपाई					
सतनाम	मेरो कहा माने नहिं कोई। आवत जात बहुत दुखा होई।३८४।	दुखा दारुण है यम जंजाला। सतगुरु शब्द करे प्रतिपाला।३८५।	जिन जिन मानु शब्द निजु सारा। दिव्य दृष्टि भई उजियारा।३८६।	सत शब्द शिष्य जो पावे। वीरा दे तब दर्श देखावे।३८७।	जन्म जन्म के पाप कटाई। जाय छप लोक बहुरि नहिं आई।३८८।	पचीस प्रकृति और तीनों नारी। पांच तत्व है आत्म धारी।३८९।	योग जाप युक्ति प्रधाना। कौन धरा जहं हंस स्थाना।३९०।
सतनाम	योगी सो जो करे बखाना। कौन धरा जहं उपजे ज्ञाना।३९१।	कौन धरा जहं पीवे पानी। कौन धरा जहं सुरति समानी।३९२।	कहवां पचीस प्रकृति के डेरा। कहवां पांचो भूत निमेरा।३९३।	पाप पुन्य भोग कहं करई। कौन धरा जहं शून्यहि रहई।३९४।	उन्मुनि मूल कमल रहु फूला। उपजे प्रेम होय स्थूला।३९५।	गुप्तचर में प्राण समाना। त्रिकुटी शुन्य पवन स्थाना।३९६।	अमी तत्व तहं पीवे पानी। कमल नाल तहां सुरती समानी।३९७।
सतनाम	इन्द्री काम भोग यह करई। नासा बास आपु सब हरई।३९८।	सो योगी यह जग में राधे। पवन साधि जो मन के बांधे।३९९।	आलस निन्द्रा बसि सब करई। सोग सन्ताप आपु सब हरई।४००।	आलस निन्द्रा कबहिं न राता। काम बिन्द कबहिं नहिं पाता।४०१।			
सतनाम		साखी - ३४					
सतनाम		जोगिया सो जोगहीं मातल, माते भेद बिचारी।					
सतनाम		पांच तत्व अपने बस करे, दुरमती सभ दुरीडारी॥					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	धर में आवे सिरजनि हारा। अमर होय पावे कर्तारा।४०२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ऐसन योगी होखे कोई। गोरखा तुल्य यह गनिये सोई।४०३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जब लगि योग तब लगि सुख पावे। काया पतन बहुत दुःख दावे।४०४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ज्ञान मत है सबते भीना। पुरुष नाम निजु हृदये चीन्हा।४०५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जग में योगी जटा धारी। नाच नचावे दोजक भारी।४०६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	भक्ति ज्ञान जो जाने कोई। प्रेम रूचित तब हृदये होई।४०७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	अनभो अनहद करे विचारा। सूझि परे तब उतरे पारा।४०८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सूझे तीनि लोक ते न्यारा। पुरुष पुरान निजु नाम अधारा।४०९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	अभय लोक तहं भय के नासा। युग-युग अमर करे बेलासा।४१०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सुरति बांधि चेतनि जो ठाने। पहुंचे सो जो मन के जाने।४११।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	मूल शब्द तहं ले पहुंचावे। जो कोई सतगुरु होय लखावे।४१२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	स्वप्ने भर्म न ताके होई। पहुंचे जाय सबेरा सोई।४१३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	अभय लोक तहं भय ना होई। अमृत प्रेम पिवे सब कोई।४१४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	दिव्य दृष्टि ज्ञान लौ लावे। जाय छप लोक बहुरि नहिं आवे।४१५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	भव बूढ़त अमर होय जाई। सतगुरु शब्द प्रेम पद पाई।४१६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ताको घट सदा उजियारा। अमर पावे सिरजनि हारा।४१७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	अमृत बचन सभनि ते बोले। प्रेम युक्ति कबहिं नहिं डोले।४१८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	झूठ कहे नर दुर्मति सोई। साच कहे आमृत रस होई।४१९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	साखी - ३५	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सत शब्द यह बूझि के, दुर्मति घाले धोय।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	कहे दरिया घट निर्मल, मैला कबहिं न होय॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	पावे प्रेम पद जग उजियारा। सुरति बांधि करे अनुसारा।४२०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	निजुपुर पहुंचे विलम्ब न होई। जौं मन चीन्हि के पावे कोई।४२१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	पांच पचीस अपने वश होई। काम क्रोध तृष्णा सब खोई।४२२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ऐसन योगी योग पसारा। ताको घट सदा उजियारा।४२३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	होखे योग ना मन वश आवे। जन्म-जन्म ऐसे जंहड़ावे।४२४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	भक्ति ज्ञान का करो विचारा। सहज मुक्ति भव सिन्धु उबारा।४२५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	मन के धार चिन्हों चित लाई। कसि कमान ज्ञान पर आई।४२६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	21	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम		सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तीनि लोक भव वेद पसारा। तामे चीन्हो ज्ञान विचारा।४२७।	तामे सतगुरु सब ते न्यारा। चौथा लोक ताको पैसारा।४२८।	निश्चै अजर अमर होई जाई॥ कबहिं ना या जग भटका खाई।४२९।	अमर लोक महं अमृत पीवे। मुक्ति महातम युग युग जीवे।४३०।	अन्तर योगी भवन महं बासा। प्रेम पुरुष जहं भय के नाशा।४३१।	युग-युग रहे पुरुष के पासा। अविगति देखे अजब तमाशा।४३२।	सतगुरु शब्द मानहु सत सोई। जन्म-जन्म के दुर्मति खोई।४३३।
छन्द - ७						
जीवन मुक्त भव रहित है, भव सिन्धु पार उतारहीं।	जन जानि भजु सतनाम के, सुगन्ध परिमल आवहीं॥	दनुज दावन ज्ञान की गति, प्रीति पंथ सोहावहीं।	हरहीं कलि मल जक्त जीवन, सन्त सो गुण गावहीं॥			
सौरठा - ७						
परमारथ परमानन्द, पिया पर सुरति लगावहीं।	ज्यों शरद को चन्द, जग जीवन गुण ज्ञान॥					
चौपाई						
जग लागि प्रेम युक्ति नहिं होई। कतनों ज्ञान कथे नर लोई।४३४।	सतगुरु शीतल शब्द समाई। अमी प्रेम रस सहजे पाई।४३५।	अलि पंकज जो रहा लोभाई। बिहरि बिलगि फिरि हिलि मिलि जाई।४३६।	ज्यों चन्दहिं चित दीन्ह चकोरा। ऐसी प्रीति करे नहिं भोरा।४३७।	भूलि-भूलि सभ जाहिं नशाई। ज्ञान बिना नहिं दृढ़ देखाई।४३८।	सोई गुरु निश्चै चित भावे। जो जन जियतहिं मुक्ति बतावें।४३९।	तन छूटे फेरि परहिं अन्देशा। कैसे बूझहिं मुक्ति सन्देशा।४४०।
राह छेकि यम करहिं अहारा। देह धरे भर्महिं संसारा।४४१।	तन छूटे पुनि कहां समाई। कहु कैसे नाम भजन लौ लाई।४४२।	जियतहिं सत पद जौं मन लाई। तन छूटे सत शब्द समाई।४४३।	भक्ति बिना यम दारुण अहई। बिना ज्ञान कहु कैसे लहई।४४४।	भर्मि भर्मि फेरि भव जल आवे। मन नहिं थीर तब कौन बचावे।४४५।	एके चोर सकल जीव मारे। कहे दरिया ले परबश डारे।४४६।	मूल घटे पुनि सब रस जाई। सतगुरु सुरति लगावहु भाई।४४७।
22						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	राव रकं जैहं सब कोई। सब मिलि जैहें सरबस खोइ।४४८।	सतनाम	जैहें पंडित वेद पढ़न्ता। देहि धरि-धरि फेरि भर्मि अनन्ता।४४९।	सतनाम	सपतद बिना सकल सब जाई। भक्ति महातम गुण नहीं गाई।४५०।	सतनाम
सतनाम	तीनि लोक रहु डोरी से बन्धा। हृदय न सूझे चक्षु का अन्धा।४५१।	सतनाम	छूटे डोरी जब चेतन होई। एक नाम निजु पावे सोई।४५२।	सतनाम	पावे वस्तु अनुपम बानी। पूरण पद उपजे जहं ज्ञानी।४५३।	सतनाम
सतनाम	जब लगि दृष्टि एक नहिं आवे। कर्षित काल संशय महं धावे।४५४।	सतनाम	जब सतगुरु सत शब्द मसाई। दुर्मति काल निकट नहिं आई।४५५।	सतनाम	कोटि तीर्थ साधुन के चरना। भक्ति भाव किलि विष सभ हरना।४५६।	सतनाम
सतनाम	साधु नकिट सभ तीर्थ कहावे। भूला भर्मि के जग भर्मावे।४५७।	सतनाम	भर्मि रहा नर नाम बेहूना। पल-पल होखे मूल मंह छीना।४५८।	सतनाम	शिव भक्ति सब जीव जहाना। आतम राम नहीं चीन्हू अपाना।४५९।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी- ३६</p> <p>आतम दर्शी ज्ञान निजु, कबहीं न होखे भीन।</p> <p>सतगुरु चरण समाईये, रहे चरण लवकीन॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	योग युक्ति तेजि भोग सब करई। नाम बिना नर नरकहिं परई।४६०।	सतनाम	अजहूं सुमिरहु साहब धनी। एक नाम निजु हृदय आनी।४६१।	सतनाम	खाग मीन दुनो पथ भारी। मन की संशय देखु विचारी।४६२।	सतनाम
सतनाम	आवत जात जो मन के चिन्हई। सूझे ज्ञान भक्ति किछु करई।४६३।	सतनाम	कलई के काम सभे मेटि जाई। जो घट में परिचै कछु पाई।४६४।	सतनाम	यह दृढ़ मत करि लीजै अपना। कहें दरिया संत सुनो बचना।४६५।	सतनाम
सतनाम	यह अक्षर मांह निःअक्षर पावे। ज्ञान भक्ति तव दृढ़ता लावे।४६६।	सतनाम	पल पल रहे चरण लवलाई। सत साहब सामर्थ सहाई।४६७।	सतनाम	भक्त वत्सल सन्तन सुखदाई। काटि पाप जन निजु पुर जाई।४६८।	सतनाम
सतनाम	निर्भय नाम तब होहिं सहाई। सुमिरत नाम सुधा सम पाई।४६९।	सतनाम	तुम नाम गति अलख लखाई। ताते रहो चरण लौ लाई।४७०।	सतनाम	तुम नाम गति अगम अपारा। केते अधम तरे संसारा।४७१।	सतनाम
सतनाम	दीन दयाल सदा क्रिपाला। तुम सुमिरत दुख द्वन्द्व मेटाला।४७२।	सतनाम	महि धरनी धर दीन दयाला। भक्त हेतु सदा प्रति पाला।४७३।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द - ८			
सतनाम			जगजीवन जन्म सुफल ताहि को, जो भक्ति पद अनुरागहीं। भव भर्म कर्म विसारि के, सतनाम जो गुण गावहीं॥ पढ़ि वेद कितेब विचारि के, विरला जो जन जानहीं। धरि धरत ध्यान समाधि करि, गुरु ज्ञान बिना नहिं पावहीं॥		सतनाम	
सतनाम			सोरठा - ८			
सतनाम			मूल शब्द निजु सार, भव भंजन चित लाइये। दया दीपक उंजियार, या छोड़ि और न जानिये॥			
सतनाम			चौपाई			
सतनाम			एक नाम बिनु कम न होई। सदा जात नर जन्म बिगोई।४७४। भौ मत हीन ज्ञान नहिं चीन्हा। सतगुरु चरण प्रेम बिनु हीना।४७५। निकेवल निर्भय नाम सहाई। मंजन मैल काटे सब जाई।४७६। जौ साहब ध्यान धरे चित लाई। रूप अनूप जोति छबि छाई।४७७।		सतनाम	
सतनाम			साखी ३७			
सतनाम			मन पवना पर खेले, देखहु ज्ञान विचारि। राधि साधि एक अंग मिलावे, उतरि जाय भव पार॥			
सतनाम			चौपाई			
सतनाम			सुमिरहु ज्ञान सतगुरु चितलाई। का भुलहु तुम यह दुनियाई।४७८। काम क्रोध मद तेजहु भाई। काम न आवे यह चतुराई।४७९। एक नाम निजु साहेब गाई। काटहिं फन्द पाप सभ जाई।४८०। सुमिरहु सुखा सम्पति बिसराई। दिन चारि का रंग बड़ाई।४८१। योग जाप जग जीवन प्राणी। कंज पुंज में सुरति समानी।४८२। निर्मल है मल कबहूँ न आवे। ले छपलोक तुरत सो धावे।४८३। बिहित बिहिति गुण जो जन जाने। ध्यान प्रीति प्रेम रस साने।४८४। एक नाम क्षत्र सिर छाजे। अनहद ध्वनि ज्ञान तंह गाजे।४८५। जब संशय भव की बिसरावे। तब निजु नाम प्रेम पद पावे।४८६। गुरु गमि ज्ञान प्रेम लव लावे। ताते सम्पति सभ बिसरावे।४८७। जानहु सठ एक सतनामा। जन्म जात व्यर्थ बेकामा।४८८। सतगुरु शब्द सत परवाना। ताहि सन्त कर निर्मल ज्ञाना।४८९। माया रूप जलि फिरहु भुलाना। अन्तहू फेरि परिहें पछताना।४९०। यम फांस फन्द बड़ भारी। क्रिया कर्म वेद मत डारी।४९१।		सतनाम	
सतनाम						
सतनाम						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तीन लोक सब कहे पुकारी। पढ़ि गीता सब वेद बिचारी।४६२।	अन्तहुं कारण जगत भिखारी। प्रेम रूचित नहीं हृदय बिचारी।४६३।	साखी - ३८	कहें दरिया एक नाम है, मिथ्या यह संसार।	प्रेम भक्ति जब उपजे, उतरि जाय भव पार॥	चौपाई	भाव भक्ति जब दृढ़ता लावे। हीरा नाम सो परगट पावे।४६४।
भूले फिरहिं बिना गुरु ज्ञानी। सत शब्द नहीं आवहीं बानी।४६५।	सुनहु सत शब्द निजु सारा। दयानिधि भव सिन्धु उबारा।४६६।	भक्त वत्सल सन्तन सुखादाई। जन के दुख मेटा प्रभुताई।४६७।	भक्ति हेतु परगट होय जाई। जब सुमिरे दृढ़ ध्यान लगाई।४६८।	जग महिमा गति अपरम्पारा। नाम ना तूले करो बिचारा।४६९।	जन के दुख आपु दुख पावे। संकट होय तब आप छोड़ावे।५००।	कहां-कहां नहीं भये सहाई। जिन-जिन प्रेम भक्ति लवलाई।५०१।
हृदय होय विवेक दृढ़ाई। अन्तहुं होय एक फेरि जाई।५०२।	एक नाम औरी नहिं भाई। जनि भूलहु धन्धा लपटाई।५०३।	डार पताल सोर असमाना। ब्रह्मादिक सो खोजहिं जहाना।५०४।	आदि मध्य अन्त काया बिराजे। अविगति नाम क्षत्र सिर छाजे।५०५।	या कहं खोजे तब वाके पावे। बिना केवट को नाव चलावे।५०६।	दरिया कहें सुनो संसारा। निश्चै नाहीं तो भूले गंवारा।५०७।	आदि अन्त एक होई आवे। धरि-धरि भेष जक्त सभ गावे।५०८।
आदि अन्त का मर्म न पाई। देखत जगत भुला दनियार्।५०९।	अरुझे मगु मति भरम भुलाना। बसि माया संग भये देवाना।५१०।	अन्त काल जब आय तुलाना। मुख से बचन भुला सब ज्ञाना।५११।	धन धाम सो भया बिराना। जब यम पकड़ि के खैंचत प्राना।५१२।	छन्द- ६	भक्ति भाव अनूप दृढ़ता, ज्ञान को गुन गवाहीं।	सार शब्द प्रतीति करि-करि, मूल निगम लखावहीं॥
प्रेम प्रीति लगाय निश्चै, बहुरि न भव जल आवहीं।	काया खोलु कपाट अजपा, अर्ध में झरि आवहीं॥					
25						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - ६			
सतनाम			अलि मंदिर में बास, वारिज वारि के उपरे। खुलेव कंज सुबास, दिन मणि दिन भौ पत्र में॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			जब उन्मुनि प्रेम प्रगासा। खुले कंज पुंज निजु वासा।५१३।		सतनाम	
			मधुकर रास वास सुख पावे। लपटि घानि सुपट खुलि आवे।५१४।			
सतनाम			सो पद पंकज दिल में लागा। प्रेम प्रीति मन भयो विरागा।५१५।		सतनाम	
			अब संशय भव जात ओराई। प्रेम प्रीति नाम निजु पाई।५१६।			
सतनाम			मन के शंशय जे निरुवारा। अभै लोक ताको पैसारा।५१७।		सतनाम	
			पुरुष पुरान निश्चै तब पावे। स्वप्ने कबहिं न या जग आवे।५१८।			
सतनाम			सतगुरु आगे सुख बहुतेरा। सत पद का जो करे निमेरा।५१९।		सतनाम	
			हृदय ध्यान नाम लौ लावे। विमल चरण पद पंकज पावे।५२०।			
सतनाम			भर्म छुटे एक नाम सहाई। और युक्ति क्या करों उपाई।५२१।		सतनाम	
			राह करहु जे पहुंच सबेरा। अगम पंथ जहं जाहु अनेरा।५२२।			
सतनाम			करहु सारथी कोई छेके न पावे। ज्ञान डोरी पर चढ़ि के धावे।५२३।		सतनाम	
			खरची लेहु कछु संग सहाई। विलम्ब न होय पहुंचे तहं जाई।५२४।			
सतनाम			साखी - ३६		सतनाम	
			जाके पूंजी नाम है, कबहिं न होखे हानि।			
सतनाम			नाम बेहूना मानवा, यम के हाथ विकाना॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सो समार्थ की कहों उपाई। सतनाम बैठे गुन गाई।५२५।		सतनाम	
			ना सूझे तो देहुं देखाई। सन्त सेवा सतगुरु पद पाई।५२६।			
सतनाम			एक कोश यात्रा चलि जाई। गांठी सामरि बांधु बनाई।५२७।		सतनाम	
			यह तो अपरम्पार है जाना। गांठी सामरि बांधु सुजाना।५२८।			
सतनाम			जानत नर मृत्यु लोक सुख पाई॥ ताते भूलि रहा दुनियाई।५२९।		सतनाम	
			आगे सुख सागर बहुतेरा। जौं मन करे ज्ञान निजु फेरा।५३०।			
सतनाम			जौं मन की दौड़ि बुझि आवे। तब घट में परिचै कछु पावे।५३१।		सतनाम	
			मनहीं में कर्ता धर्ता अहई। मन यह राह बिगारन चहई।५३२।			
सतनाम			जौं मन ज्ञान कैद करिं आवे। तब मन साच सतगुरु पद पावे।५३३।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		साखी - ४०				
सतनाम		कहें दरिया मन कैद करू, जौं चाहो सतनाम। कर्म काटि जन निजुपुर, जाय बसे निजु धाम॥	सतनाम			
		चौपाई				
सतनाम		मनहिं चलावे मनहिं फिरावे। मनहिं तीर्थ व्रत करावे।५३४।	सतनाम			
		जौं मन ज्ञान कसौटी लावे। तब मन ज्ञान नाम निजु पावे।५३५।				
सतनाम		मनहिं नेम अचार करावे। मनहिं मन के पूजा चढ़ावे।५३६।	सतनाम			
		जौं मन मूरति आपु लखावे। तब योगी वह सिद्ध कहावे।५३७।				
		साखी - ४१				
सतनाम		मन के जीते जीतिया, मन के हारे भौ हानि। मनहिं विलोय ज्ञान करू मथनी, तब सुख उपजे जानि॥	सतनाम			
		चौपाई				
सतनाम		कहे दरिया मन डंढकत फिरे। एके चोर सकल जीव पीरे।५३८।	सतनाम			
		सो मन निर्मल निश्चै रंगा। उपजे ज्ञान साधु के संग।५३९।				
सतनाम		एक नाम प्रेम सुख चैना। करे भक्ति बोले सत बैना।५४०।	सतनाम			
		सोई करो हंसा सुख पावे। नहिं तो फेरि-फेरि काल भर्मावे।५४१।				
सतनाम		जाहिं जन्म मिथ्या जग माहीं। सतगुरु चरण सुधा सम नाहीं।५४२।	सतनाम			
		सब घट व्यापक एके रामा। स्वर्ग पताल बसे सब धामा।५४३।				
सतनाम		एके ब्रह्म सकल घट सोई। ताहि चिन्हहु सत संगति होई।५४४।	सतनाम			
		जिन्हि रचा यह सकल जहांना। आदि अन्त सत्ता परवाना।५४५।				
सतनाम		कीट पतंग सभनि में ब्यापे। यह निजु चीन्हेव ज्ञान निजु आपे।५४६।	सतनाम			
		साखी - ४२				
सतनाम		मरकट नग नहिं चिन्हहीं, नगन फिरे बन मांझ। नाम बेमुख नर बिकल है, बलु जननी होय बांझ॥	सतनाम			
		चौपाई				
सतनाम		जौं नग लाल नाम नहिं चीन्हा। मरकट मूठि आपन जीव दीन्हा।५४७।	सतनाम			
		सो शठ रट कठ मति का हीना। साधु संगति नहिं चीन्हे बेहूना।५४८।				
सतनाम		सतनाम निजु या जग तारे। सो नाम गति काहे बिसारे।५४९।	सतनाम			
		प्रथमहिं आये पुरुष अमाना। अनन्त युग ताको स्थाना।५५०।				
सतनाम		जानहु तेहि सत परवाना। महि मण्डल धरती अस्थाना।५५१।	सतनाम			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
हैं सर्वज्ञ सभनि ते न्यारा। जीवन मुक्त है जिन्द करारा।५५२।	जाकर आदि अन्न विस्तारा। अवनि पताल महि मंडल तारा।५५३।	आतम देव अन्न का पूजा। आतम छोड़ि देव नहिं दूजा।५५४।	पढ़ि-पढ़ि पोथी वेद बखाना। पत्थर पूजत फिरत भुलाना।५५५।	मुरति हृदय एक करों बखाना। तब तुम होइबहु निर्मल ज्ञाना।५५६।	जाहि कारण शठ तीर्थहिं जाई। रत्न पदारथ इहई पाई।५५७।	पढ़ि पंडित का वेद बखाना। सो घट-पट नहीं खोजे ज्ञाना।५५८।
मन की मथनी करु निजु ध्याना। ढूंढ़ि रहो एक गुप्त समाना।५५९।	देश धाबहु का धन्धा भाई। निश्चै होय तबहीं निजु पाई।५६०।	निश्चय ब्रह्म सत करतारा। निश्चै उतरहि भवजल पारा।५६१।	निश्चय तेहि मिलहीं करतारा। निश्चय भक्ति प्रेम निजु सारा।५६२।	आतम दर्श दिशे जेहि प्रानी। कबहिं न होखे भव जलहानी।५६३।	जेहि पूजे सो देवता होई। पूजे तेहि जाने नहिं कोई।५६४।	बोलता पूजे सब संशय मेटाई। तब हंसा छप लोक समाई।५६५।
जाय छपलोक बहुरि नहिं आवना। जन्म युग सुख सागर पावना।५६६।	सुखा तहां करिहें बहुतेरा। बहुरि न करिहें या जग फेरा।५६७।	निजु नाम प्रेम लव लावे। दास होय तब जग समुझावे।५६८।	तबहीं ज्ञानी साच कहावे। जो कर्ता के भेद बतावे।५६९।	मन ज्ञान एक रंग मिलावे। तब मन ज्ञान नाम एक पावे।५७०।	सतगुरु प्रेम शब्द निजु सारा। सन्त साधु मिलि करो बिचारा।५७१।	छन्द - १०
गहु गहरि ज्ञान बिचारु तै, सत शब्द में धुनि लावहीं।	यह जानेदे बहु बात बकता, शब्द नहिं दृढ़ आवहीं॥	तहं अगम है दरियाव दिल में, भेद कोई कोई पावहीं।	तहं कमल फूले भंवर भूले, जोति अति छबि छावहीं॥	खोरठा - १०	दूजा दोविधा डारि, एक नाम संसार में।	भव जल जाहिं न हारि, निश्चै नाम बिचारिये॥
चौपाई	जीवन मुक्ति एक ब्योहारा। ताहि सुमेरे जीव होय उबारा।५७२।	प्रेम भक्ति जिन्ह केवल जाना। ज्योति मंडल मंह ताकर प्राणा।५७३।				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जपहु	ब्योहारा।	बिना	नाम	पशुआ	औतारा।५७४।
सतनाम	एक	नाम	जौं	हृदये	लाई।	जन्म-जन्म के पाप कटाइ।५७५।
सतनाम	सबते	अधिकारा।	पुजहु	देव	का करहू	बिचारा।५७६।
						साखी - ४३
सतनाम						सतनाम अमृत नहिं चाख्यो, नहीं पावे पैसार।
						कहे दरिया जग अरुझे, एक नाम बिना संसार॥
						चौपाई
सतनाम	सतगुरु	ध्यान	रहो	लवलाई।	मेटे	जरा जीव जम नहिं खाई।५७७।
सतनाम	जन्म-जन्म	के	प्राश्चित	जावे।	निकेवल	हो छपलोक समावे।५७८।
सतनाम	करहू	ध्यान	सतगुरु	के सेवा।	सकल	मही का पूजहु देवा।५७९।
सतनाम	निःतत्व	छोड़ि	जों	तत्व	विचारे।	सो हंसा छपलोक सिधारे।५८०।
सतनाम	गूंगा	हो	अमृत	सो पावे।	आपु	चखो फिर औ चखावे।५८१।
सतनाम	चाखो	प्रेम	निश	वासर	लाई।	उठत बैठत रहे समाई।५८२।
सतनाम	,जों	गृह	मांह	रहिहें	जाई।	बूझि विचारि सो बचिहें भाई।५८३।
सतनाम	सन्त	सेवा	करिहे	चित	लाई।	ताके यम निकट नहिं जाई।५८४।
सतनाम	सन्त	सोई	सन्तोष	में आवे।	सतगुरु	चीन्हि के माथा नावे।५८५।
सतनाम	ताल	मृदंग	समाज	बनावे।	भेष	डारि सभ जग समझावे।५८६।
सतनाम	बहुविधि	नाचे	जगत	रिझावे।	सो नर	सपने मोहि न भावे।५८७।
						साखी - ४४
सतनाम						बूडे भेष अलेख सो, काल बली धरि खाय।
सतनाम						बांचे सो जेहि भर्म नहिं, सतगुरु भये सहाय॥
						चौपाई
सतनाम	शब्द	सजीवन	है	गा	मूला।	जो कोई प्रेम करे स्थूला।५८८।
सतनाम	शब्द	देखि	जम	निकट	न आवे।	मंतर सांपिन धुरि चटावे।५८९।
सतनाम	जो	कोई	शब्दहि	करे	विचारा।	वाद विवाद तेजे संसारा।५९०।
सतनाम	वादि	किये	रीझे	नहिं	साईं।	जो पूछे सत शब्द दृढ़ाई।५९१।
सतनाम	तासे	अर्थ	कहब	समुझाई।	जो कोई	प्रेम रुचित होई आई।५९२।
सतनाम	बिना	ज्ञान	मूल	नहिं	देखो।	होय ज्ञान प्रेम रस पेखो।५९३।
सतनाम	पुरुष	ज्ञान	भक्ति	है	नारी।	ज्ञान भक्ति बीच नहिं डारी।५९४।
सतनाम	पहिले	भक्ति	तब	होखे	ज्ञाना।	पहिले सत तब पुरुष अमाना।५९५।
						29
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सत	सुक्रित निजु पंथ विरागा। सुमिरहिं संत निजु प्रेम अनुरागा।५६६। मुक्ति पंथ निजु खोजे सोई। पावे प्रेम निजु अर्थ समोई।५६७।	सखी - ४५-४६ सुमिरन माला भेष नहिं, नहिं मसी को अंक। सत सुक्रित दृढ़ लाई के, तब तोड़े गढ़ बंक।४५। ब्राह्मण औ सन्यासी, सब सो कहा बुझाय। जो जन शब्दहिं मानहिं, सोई सत ठहराय।४६।	चौपाई अगम ज्ञान कथा विस्तारा। चोरन के धर परा हंकारा।५६८। हाय-हाय सब मिल करई। शब्द साधि हम निश्चय धरई।५६९। तन-मन वारि प्रेम पगु दीन्हा। पद पंकज निजु हृदये चीन्हा।६००। भक्ति विराग प्रेम अनुरागा। निरालेप निजु निर्गुन जागा।६०१। त्रिगुण ते वोय रंग है भीन्हा। अजर अमान सत पुरुषहिं चीन्हा।६०२। सत सुक्रित का बीरा पावे। सो हंसा सत लोक सिधावे।६०३। अमी तत्व पीवे निजु ज्ञानी। आत्म दर्श माया बिलगानी।६०४।	साखी - ४७ नेम अचार षट कर्म, नहीं पात को पान। चौका चन्दन ठहर नहीं, मीठा देव निदान॥	चौपाई मीठा है परसाद हमारा। समुझि लेहीं कोई ज्ञान करारा।६०५। पहिले मुखा में प्रेम लगावे। तब पीछे ले हाथ उठावे।६०६। जो दाफा जन होय हमारा। ताहि देव परसाद बिचारा।६०७। देवे परवाना सत की बानी। चरणामृत लेवे मानी।६०८। योग जुगुति निज गहबे बानी। जाते काल करे नहिं हानी।६०९। अदब अदाव सलाम जो करई। एक हाथ सिर ऊपर धरई।६१०। हिन्दू तुरुक हम एके जाना। जो माने यह शब्द निशाना।६११। सब जीव साहब के अहई। बुझि विचारि ज्ञान यह कहई।६१२। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहू जनि मानी।६१३। अन्न पाली सभा एके होई। हिन्दू तुरुक दूजा नहिं कोई।६१४। करि मुरीद सत शब्द दृढ़ावे। कलिमा बुझि विचारि पढ़ावे।६१५।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४८			
सतनाम			किताब पुरान हम बूझि के, राखा शब्द अमान।		सतनाम	
			मुख्य कल्मा नहिं कहिये, अलिफ देखु निशान॥			
			चौपाई			
सतनाम			अलिफ निशान देखु दुर्वेशा। जो जाने सो कहे सन्देशा।६१६।		सतनाम	
			विहिस्त बास में रहा समाई। बेइलि चमेइलि डांक तहं आई।६१७।			
			नूर जहूर दीदम है साफा। दर्श दीदार कतल करु काफा।६१८।			
सतनाम			साखी - ४९		सतनाम	
			जैसे फूल जो तिल में, बास जो रहा समाय।			
			ऐसे शब्द सजीवनी, सब घट सुरति देखाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			पेरे तिल्ली तेल अलगाना। शब्द चीन्हि ऐसे बिलगाना।६१९।		सतनाम	
			यह सन्धि निजु जाने सोई। जाके हृदय विवेक कछु होई।६२०।			
सतनाम			धरती अकाश बन्धन जिन्ह कीन्हा। सतनाम निजु परिचै दीन्हा।६२१।		सतनाम	
			चौथा लोक शब्द पहुँचावे। तीनि लोक धोखा परि जावे।६२२।			
			फूल पर भंवरा बैठे जाई। निजु बास कमल मंह पाई।६२३।			
सतनाम			वेद पढ़ि जनि भूले कोई। पंडित पढ़ि के चले बिगोई।६२४।		सतनाम	
			वेद भेद निजु कहें बिचारा। शास्त्र गीता ज्ञान निरुवारा।६२५।			
			साखी - ५०			
सतनाम			कहे दरिया सुनु सन्तहिं, शब्दहि करो विचार।		सतनाम	
			जब हीरा हीरम्मर होईहें, तब छुटीहें संसार।			
			चौपाई			
सतनाम			निर्भय होय रहो नर लोई। है जगाति दुर्ग है सोई।६२६।		सतनाम	
			द्रूग दानी अहै बंटवारा। बिनु ज्ञान नहिं उतरहिं पारा।६२७।			
सतनाम			जातिहिं जनि भूले संसारा। यों नहिं होइहें हंस उबारा।६२८।		सतनाम	
			शब्द बिलोय जो करे बिवेखा। तबहिं हंस परे कछु लेखा।६२९।			
			यम के मान इमि मर्दो जाई। शब्द गहे जौं तत्व लगाई।६३०।			
सतनाम			निर्मल है सतगुरु की बानी। मूल प्रगाश उन्मुनि जानी।६३१।		सतनाम	
			चन्द चकोर दृष्टि में लागा ऐसे उलटि जनु लागु सुभागा।६३२।			
			31			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
आपन मन बोधो जौं कोई । आन बोधो तो निर्मल होई । ६३३ ।						
आपु न बोधो बोधो संसारा । सो जन भव जल नाहिं उबारा । ६३४ ।						
साखी - ५१						
दरिया दिल दरियाव है, सन्तो करो बखान ।						
जब सतगुरु पद पाइये, मरदो यम के मान ॥						
चौपाई						
मन परिचै विनु पार न पावे । या जग गोविन्द को गुन गावे । ६३५ ।						
सोई विश्वम्भर सोई है रामा । सोई कृष्ण गोपिन संग कामा । ६३६ ।						
सोई निकलंकी बावन रूपा । बौध रूप सो धरा स्वरूपा । ६३७ ।						
तीन लोक इनकी ठकुराई । वेद कितेब यम जाल बनाई । ६३८ ।						
तीन लोक आशा जिन्हि लाई । फेरि भर्मे चौरासी जाई । ६३९ ।						
चौथा लोक सतगुरु की बानी । ताके खोजेहु पंडित ज्ञानी । ६४० ।						
भेद निरखि लो सो तत्व सारा । काया कोट बड़ा बिस्तारा । ६४१ ।						
छन्द - ११						
ज्ञान गमि विचारु निर्मल, सुरतिमूल प्रगासहीं ।						
तहं पदुम पत्र अर्ध झलके, जोति अति छबि छावहीं ॥						
तहं हंस वंश मान सरोवर, चुंगत सो मन भावहीं ।						
कहे दरिया दर्श सतगुरु, ज्ञान को गुण गावहीं ॥						
सोरठा - ११						
भव जल अगम अपार है, नाम बिना नहिं बांचिहो ।						
नौका नाम अधार, जौं चाहो भव तरन कहं ॥						
चौपाई						
तीन लोक यम जाल पसारा । विना भेद नहिं उतरे पारा । ६४२ ।						
गुप्त भेद जौं पावे कोई । ताहि देखि चला यम रोइ । ६४३ ।						
होय चेतनि तब मणि उंजियारा । शब्द सिंगासन चला असवारा । ६४४ ।						
साखी - ५२						
बारह मंडल नौ खण्ड पृथ्वी, तामे शब्द निनार ।						
उलटि पवन षट चक्रहीं छेदे, देखहु काया विचार ॥						
32						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	चारि कमल जो परसे भाई। भोर करे पुनि सभ रस जाई।६४५।	सतनाम	छः चक्र के भेद है सारा। जो बूझे सतगुरु का प्यारा।६४६।	सतनाम	सतगुरु विना होहिं नहिं पारा। और गुरु पाखण्ड पसारा।६४७।	सतनाम
सतनाम	गुरु सोई जो शिष्य बुझावे। शिष्य सोई साहब लौ लावे।६४८।	सतनाम	बहुत गुरु करहिं गुरुवाई। शब्द बिना उन भेद न पाई।६४९।	सतनाम	शब्द पाई बलु देई दमामा। अभय निशान पाय सुख धामा।६५०।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ५३-५४	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	अभय निशान बजाबहु सन्तो, परखहु भेद निजुसार।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	यम के मान मर्दि के, जिन्दा सत करतार।५३।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	दरिया सूरा सोई सराहिये, जो बूझे दिल मनि खोलि।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	कायर कादर विचलि चले, ना मिला वचन अनमोल।५४।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	बिनु मुख वचन शब्द एक बोला। बिनु पगु निरति जगत में डोला।६५१।	सतनाम	वोय अनहद जग लगे ताला। सूर चढ़ाय चन्द मनि माला।६५२।	सतनाम	यह झिंझीं यंत्र बाजे भाला। पीवे प्रेम होय मस्त मतवाला।६५३।	सतनाम
सतनाम	अजपा के यह भेद बताई। पांच तत्व तहं परगट पाई।६५४।	सतनाम	तत्व पाय निःतत्व में जाई। तत्व में तत्व रहा छवि छाई।६५५।	सतनाम	तत्व कियारी जोते किसाना। तत्वहिं गहे शब्द निर्वाना।६५६।	सतनाम
सतनाम	सतनाम परिचय नहिं पाई। सुर नर मुनि सभ चले भुलाई।६५७।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
		सतनाम	साखी - ५५	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	सतगुरु साहब साच है, देखो शब्द विचारी।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	डोरी गहो शब्द की, तन मन डारो वारी।।	सतनाम		सतनाम
		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतगुरु आगे तन मन दीजै। प्रेम प्रीति रस कबहिं न छीजै।६५८।	सतनाम	मन की ममिता सभे दूरि डारा। परखि लेहु शब्द निजु सारा।६५९।	सतनाम	शब्द एक मैं कहों बुझाई। जो तुम पंडित बूझो आई।६६०।	सतनाम
सतनाम	मूल बिहंगम डोरी भाई। रवि शशि पवन जो शून्य समाई।६६१।	सतनाम	सतगुरु शब्द तबहिं लखि आवे। मूल फूल अमृत मुख पावे।६६२।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	33	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पचीस बोधु साधु की डोरी। हाकमसदा राखे कर जोरी।६८६।	सतनाम	ज्ञान की डोरी प्रेम रस पीजे। गुरु गमि ज्ञान समुझि करि लीजे।६८७।	सतनाम	होय प्रेम तब सुरति समाना। निः अक्षर सुरति साच है ज्ञाना।६८८।	सतनाम
सतनाम	द्वादश चले शब्द परवाना। आवत जात सो चीन्हें ठेकाना।६८९।	सतनाम	मन पवना के एके संग। ज्ञान बिचारि बुझे यह रंगा।६९०।	सतनाम	एके मन डहके संसारा। क्षण महं निकट होय निनारा।६९१।	सतनाम
सतनाम	मन के रंग बुझे जन कोई। निर्मल होय निरन्तर सोई।६९२।	सतनाम	यह मन जाल जंजाल जहाना। सो मन चीन्हि खोजहु निजु ज्ञाना।६९३।	सतनाम	साखी - ५८	सतनाम
सतनाम	यह मन काजी यह मन पाजी, यह मन कर्ता दूर्वेश।	सतनाम	यह मन पांडे यह मन पंडित, यह मन दुखिया नरेशा॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	परम गुरु यह पुरुष की बानी। दूरि तजु यह जग की सयानी।६९४।	सतनाम	मन चीन्हहु तो होय निर्वन्दा। छूटि जाय तब यमपुर फन्दा।६९५।	सतनाम	जौं गति चाहत हौ तुम दासा। दूरि तेजो यम कर फासा।६९६।	सतनाम
सतनाम	हंस सरवर यह तेजलो नहिं जाई। मानसरोवर मोती खाई।६९७।	सतनाम	होय हीरा जब निर्मल काया। जाय छपलोक बहुरि नहिं आया।६९८।	सतनाम	छपलोक की अकथ कहानी। पावे अमृत निर्मल बानी।६९९।	सतनाम
सतनाम	मन कै धोखा मेटि सब जोई। छपलोक में अमृत पाई।७००।	सतनाम	कल्प कोटि के मेंटहि अन्देशा। छूटि जाय तब यमपुर देशा।७०१।	सतनाम	साखी - ५९	सतनाम
सतनाम	छूटे यमपुर देश यह, परशहु प्रेम निजु ज्ञान।	सतनाम	कामिनि कला फन्द जग त्यागहु, निर्मल शब्द अमान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	यह मति भूलहु गीता की बानी। समुझि भेद लीजे कछु ज्ञानी।७०२।	सतनाम	लावहु प्रेम प्रीति निजु जाई। सतगुरु ज्ञान अमृत फल पाई।७०३।	सतनाम	क्षेमा क्षीर तब दही जमाई। जोरन युक्ति प्रेम रस पाई।७०४।	सतनाम
सतनाम	शील सन्तोष खम्भ करु भाई। सुरति निरति का नेता लाई।७०५।	सतनाम	तन करु मटुकी प्रेम करु पानी। निकले घृत सुवास बखानी।७०६।	सतनाम	ऐसी युक्ति प्रेम रस पीजे। तब माखन महि घृत कछु लीजे।७०७।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कौन तत्व ले सुरति समाई। कैसे प्रेम चुवे मुख लाई। ७३०।	कौन पवन गर्जे ब्रह्मण्डा। कौन काल राय कर डंडा। ७३१।	साखी - ६२	सार पवन और चौदह मंत्र, लीजै ज्ञान बिचारि।	छः चक्र अष्ट दल कमल, जाल कर्म सब डारि॥	चौपाई	एक पवन सार निजु बानी। सोई भेद निरखो तुम ज्ञानी॥ ७३२।
निरति सुरति में आवे जाई। जाते जोतिहिं जोति समाई। ७३३।	दुई कर पवन सूर औ चन्दा। चढ़े गगन सब कर्म निकन्दा। ७३४।	अभय नाम निजु जाने सोई। पीवे प्रेम सुधा रस वोई। ७३५।	इंगला पिंगला सुखमनि फेरे। लाय कपाट गगन गहि घेरे। ७३६।	छः चक्र निजु करे निमेरा। सो योगी घर पहुंचु सबेरा। ७३७।	सत शब्द जो करे बखाना। स्वेत ध्वजा निश दिन फहराना। ७३८।	आठवें अनुभव देखु बिचारी। आठ कमल दल भीतर बारी। ७३९।
नौ नाटिका करहु निमेरा। पीवे प्रेम स्थिर घर डेरा। ७४०।	दशवें द्वार रन्ध्र करु बन्दा। जहं कामिनि निति करे अनन्दा। ७४१।	इगरहवें ज्ञान क्षत्र सिर धरई। पुरुष होय जग में औतरई। ७४२।	बरहवें भीतर बाहर धावे। पांच तत्व तहं परिचै पावे। ७४३।	तेरहवें तीन गुण ते न्यारा। सत पुरुष निजु ज्ञान बिचारा। ७४४।	चौदहवें आवा गवन न होई। निकट सिंगासन पहुंचे सोई। ७४५।	महिमंडल सब रचा बनाई। दीप-दीप सुगन्ध सोहाई। ७४६।
चांद सूर्य नहिं मणि उजियारा। नहिं उड़गन गगन के तारा। ७४७।	अक्षय वृक्ष सुख सुन्दर सोई। अजर अमर बैठे सब कोई। ७४८।	तीन लोक नष्ट जब होई। ऐसा वेद कहे सब कोई। ७४९।	तब यह जीव कहां रहि जाई। सो जगह मोहिं देहु देखाई। ७५०।	साचो पंडित मानहु भाई। पढ़ि-पढ़ि गीता अर्थ बुझाई। ७५१।	सब छोड़ो जग की चतुराई। अन्तकाल फेरि यम धरि खाई। ७५२।	साखी - ६३
पंडित पढ़ि जनि भूले कोई, खोजु मुक्ति के भेव।	शास्त्र गीता ज्ञान बिचारहु, करहु यम के सेव॥					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नाहीं दिल सागर तुम देखा। नाहीं करि लेहु वचन विशेषा।७५३।	सतनाम	नाहीं प्रीति पिया से लाई। नाहीं ज्ञान गुरु गमि पाई।७५४।	सतनाम	नाहीं शिव शक्ति को ज्ञाना। नाहीं आतम चिन्हहु अपाना।७५५।	सतनाम
सतनाम	नाहीं पाँच तत्व तुम साधा। नाहीं न ओ नाटिका राधा।७५६।	सतनाम	नाहीं पच्चीस पवन तुम चीन्हा। प्रक्रीति गीत विवरण नाहीं किन्हा।७५७।	सतनाम	साखी - ६४	सतनाम
सतनाम	यह एको नहीं जानहु पंडित, कैसे के होय निस्तारा।	सतनाम	मन ममिता मद त्यागहु, मिलिहे शब्द निजुसार।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	मूल गवाय तुम जाहु गंवारा। पकड़ि पेड़ तब पकड़हु डारा।७५८।	सतनाम	झूलहि आदि अन्त ले सोई। मरन काल तब चले बिगोई।७५९।	सतनाम	काम क्रोध लोभ बड़ भारी। पंडित वेद कीन्ह विस्तारी।७६०।	सतनाम
सतनाम	क्रोधो नष्ट भये मुनि ज्ञानी। क्रोधो कीन्ह भूल में हानी।७६१।	सतनाम	क्रोधो रावण क्षण में गैयू। लंका विभीषण पल में भैयू।७६२।	सतनाम	क्रोधो यादव गये नशाई। छप्पन कोटि जल वर्षहि आई।७६३।	सतनाम
सतनाम	क्रोधो गन गंधर्व सब गैयू। पंडित पढ़ि के क्रोधी भैयू।७६४।	सतनाम	लोक वेद लहि यमपुर वासी। भगति भाव ब्राह्मण सब नासी।७६५।	सतनाम	मुक्ति द्वारा यम ने मारा। नवग्रह लाय ठगौरी डारा।७६६।	सतनाम
सतनाम	पढ़ि पाखण्ड पत्थर का पूजा। आतम देव और नहीं दूजा।७६७।	सतनाम	साखी - ६५	सतनाम	तब तोहि जानौ पंडिता, मुक्ति कहि देहु आय।	सतनाम
सतनाम	छपलोक की बाते कहहु, तब मोर मन पतियाय।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	पोथी पत्रा गीता गाबहु। भेद नहीं तो वेद सुनावहु।७६८।	सतनाम
सतनाम	आनकर पाप आपन सिर लीजै, आपन मुक्ति कहां तुम कीजै।७६९।	सतनाम	कोटिन ब्रह्मा खोजत भुलाना। छपलोक नहि सुरति समान।७७०।	सतनाम	सुरति चीन्हे बिनु भये देवाना। मन परिचै बिनु आपु भुलानी।७७१।	सतनाम
सतनाम	तुलसी तारक मंत्र हढ़ावे। राम तारक से जग भरमावे।७७२।	सतनाम	माया पक्ष परसे सब कोई। निरमै यह खोजे नहिं सोई।७७३।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	यह माया बलि छरो बनाई। माया ते जग चुनि चुनि खाई।७७४।	सतनाम	माया ते सकल बसि कीन्हा। माया के सीता नहीं चीन्हा।७७५।	सतनाम	सो माया रावण धर गैयू। बुद्धि बल ज्ञान सभो बसी भैयू।७७६।	सतनाम
सतनाम	क्षण मंह रावन भये विध्वंसा। कुल नहिं राखिन एको बंशा।७७७।	सतनाम	साखी - ६६	सतनाम	मन की ममिता काल है, कर्म करावे जानि।	सतनाम
सतनाम	गर्व मिलावे गर्द में, रावण की भई हानि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	जिन्हिं ब्रह्मा के वेद सुनाई। ताकी गति ब्रह्मा नहिं पाई।७७८।	सतनाम
सतनाम	कोटि ब्रह्मा गये भुलाई। कोटिन इन्द्र मेघ चलि आई।७७९।	सतनाम	केते कृष्ण जगत भरमाई। गोप सखा संग गाय चराई।७८०।	सतनाम	मुखा मुरली लिये आपु बजाई। वृन्दावन बसि तान सुनाई।७८१।	सतनाम
सतनाम	केते कंस वध उन्हिं कीन्हा। कै बार कुबरि मन दीन्हा।७८२।	सतनाम	केते शंकर योग सब करहीं। उपजि विनसि देह सब धरहीं।७८३।	सतनाम	साखी - ६७	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया सुनु पंडिता, यह कर्ता के भेव।	सतनाम	पत्थर फूल काहे पूजहू, करहु सुमिरनी सुकदेव	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	पंडित नाम का पंथ विचारा। सतनाम। है प्रेम अधारा।७८४।	सतनाम	सत सारथी कर लीजै अपना। जन्म-जन्म के मेटु कल्पना।७८५।	सतनाम	ताहि खोजो जो खोजहिं कबीरा। बैठि निरन्तर लीजै बीरा।७८६।	सतनाम
सतनाम	जन्म-जन्म के धोखा मेटि जाई। जाय छपलोक बहुरि नहिं आई।७८७।	सतनाम	केते ब्रह्मा जांहि नशाई। इन्द्र कतेको बिनसहिं आई।७८८।	सतनाम	जैसे शेष सहस सुख बचना। तीनि लोक का इहे है रचना।७८९।	सतनाम
सतनाम	चलहिं शंकर योग बिसारी। चलहिं कृष्ण गोपाल मुरारी।७९०।	सतनाम	जैहे योगी यती सब कोई। तीनि लोक काल बसि होई।७९१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	39	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ६८			
			कहे दरिया सुनु पंडिता, देखो शब्द बिचारि।			
			जो नर जइहें अमर लोक मह, साहब सुरति संवारि॥			
			चौपाई			
सतनाम			दूढ़त सुर नर मुनि सब हारें। आदि अन्त नहिं करे विचारे।७६२।			
सतनाम			धरि-धरि रहे जोति के आशा। सो नर जइहें जम के फांसा।७६३।			
सतनाम			पुरुष पुरान जिन्हि हंस उबारा। ताको खोज ना करहिं गंवारा।७६४।			
सतनाम			भाटका मेंटे ना मूल भेटाई। ऊंच नीच कहि गये भुलाई।७६५।			
सतनाम			गुरु गमि ज्ञान गमि नहिं कीन्हा। नहिं गुरु सतगुरु कहं चीन्हा।७६६।			
सतनाम			सोई कहें जो कहहिं कबीरा। दरिया दास पद पायो हीरा।७६७।			
सतनाम			साहेब परिचय दीन्ह देखाई। ताते लोक कहा समुझाई।७६८।			
सतनाम			झूठ बात जनि जाने कोई। शब्द विचार करहिं नर लोई।७६९।			
सतनाम			यम जगाति बड़ा उत्पाता। करे अचानक जीव के घाता।८००।			
सतनाम			मातु पिता कोई संग ना लागा। मुअला पुरुष नारि जीव त्यागा।८०१।			
सतनाम			नहिं माया रोवहीं बेचारी। जेवहिं कुरुमा भरि-भरि थारी।८०२।			
सतनाम			मुवला कुरुमा नरक की देहीं। मद मुख लाय मास मुख देहीं।८०३।			
सतनाम			छोटी जाति के कर्म बिधाना। औरी जम के नरक समाना।८०४।			
सतनाम			बड़ जीव मछली सब खाहीं। मुअला पित्र नरक के जाहीं।८०५।			
सतनाम			मारहिं हरनी खासी बगेरा। मारि-मारि सब खोलहिं अहेरा।८०६।			
सतनाम			मासं एक दूजा नहिं होई। समुझि जल अर्पे नहिं कोई।८०७।			
सतनाम			आधा पाप ब्राह्मण के राता। राह देखाए करे जीन घाता।८०८।			
सतनाम			हिन्दू तुरुक इमि दुनो भुलाना। दोनो बादिहि बादि बिलाना।८०९।			
सतनाम			वह हरनी वह गाय जो खाई। लहु एक दूजा नहिं भाई।८१०।			
सतनाम			ब्रह्मण सो वृषभ के साजा। कल्प कोटि ले होत अकाजा।८११।			
सतनाम			मोलना दोजक जार में आवे। जिबरइल जबर तेहि बहुत सतावे।८१२।			
			छन्द - १२			
			भरमि भरमि भवसागर, गुरु ज्ञान गमि नहिं पावहीं।			
			पढ़ि वेद कितेव पुरान की गति, दर्श दया नहिं आवहीं॥			
			भवन भारी जबना दीपक, नाम मणि बिसरावहीं।			
			कहें दरिया दागादिल में, ललचि मन लपटावहीं॥			
			सोरठा - १२			
			अंधियारे दीपक दीजिये, तब होखे प्रकाश।			
			ज्ञान समुझि कर लीजिये, उतरि जाय भव पार॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मानुष जन्म है सुफल अनन्दा। सो जन परे ना यम के फन्दा।८१३।	सतनाम	कहत सुनत सब जाय नशाई। मन परिचै बिनु मूल गंवाई।८१४।	सतनाम	नाम बिना कस जीवन कहावे। जौं नहिं गुरु गमि ज्ञान लखावे।८१५।	सतनाम
सतनाम	सन्त सोई शीतल सत बानी। अमृत प्रेम पीवे वह ज्ञानी।८१६।	सतनाम	मस्तक मुक्ता जा कहं होई। मस्त गयन्द कहावे सोई।८१७।	सतनाम	ताके पारस श्रीमुख लागा। भव नहिं निकट रहे वोय जागा।८१८।	सतनाम
सतनाम	बिनु मुक्ता मस्तक है हीना। सो नर ऐसे सतगुरु बीना।८१९।	सतनाम	भुवंग सोई जाके मणि उजियारा। जाके तेज दीपक भौ टारा।८२०।	सतनाम	रहे सनीप वोय सम्मुख सोई। औरी फिरे सब केचुआ होई।८२१।	सतनाम
सतनाम	सन्त सोई मणि मस्तक मूला। ज्ञान रतन कबहीं नहिं भूला।८२२।	सतनाम	साखी - ६६	सतनाम	दरिया भक्त कहावे सोई, जाके मणि उजियार।	सतनाम
सतनाम	औरी भर्मि के भटकि मरे, निर्भय नाहिं गंवार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	पत्थर नाम कहावे सोई। जो परसे सो कंचन होई।८२३।	सतनाम
सतनाम	औरी परसे सब शील पखाना। ताको कवि जन करे बखाना।८२४।	सतनाम	सतगुरु शब्द वचन जेहि लागा। सो जन सन्त है सुरति सुभागा।८२५।	सतनाम	नारी सोई जो नरमे बोले। पिया के सेवा बचन नहिं डोले।८२६।	सतनाम
सतनाम	औरी कतेको बचन गंवावे। ताके सेवा कवि जन लावे।८२७।	सतनाम	सकल जीव कह कहेव बुझाई। पंडित के घर सोच न आई।८२८।	सतनाम	अपने ब्राह्मण विष्णु होई। घर में मेहरी साकठ सोई।८२९।	सतनाम
सतनाम	मांस खाय संग सूते जाई। ताको मुख चुंगन गहि लाई।८३०।	सतनाम	कहत फिरे हम बड़े कुलिना। घर में तुरुकिनी सो नहिं चीन्हा।८३१।	सतनाम	झूठ कहे सब झूठ सुनावे। नौगुन कांध जनेऊ नावे।८३२।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७०	सतनाम	साचो पंडित मानेव, सतशील अशील।	सतनाम	सत बसे नहिं स्वारथ जाके, सोई बड़ा बखील॥	सतनाम
सतनाम	सत्ते धरती सत्ते अकाशा॥ यह सत्ते भक्ति प्रेम परगासा।८३३।	सतनाम	ताको सत नर करो बखाना। पत्थर छोड़ी समुझे जो ज्ञाना।८३४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ना कछु बोले ना कुछ खाई। कहु ताके पूजे मिले का भाई।८३५।	सतनाम	जो कोई पंडित होखे ज्ञानी। भेद समुझि ले निर्मल बानी।८३६।	सतनाम	मेरे कहे जो मानहू प्रानी। सत शब्द ना होखे हानी।८३७।	सतनाम
सतनाम	अभय लोक जहं भय नहिं जानी। होय हीरा तब निर्मल बानी।८३८।	सतनाम	यह शब्दे तारे शब्दे उबारे। शब्दे चढ़ि छपलोक सिधारे।८३९।	सतनाम	यह शब्दे घोड़ा हंस असवारा। यह शब्दे चाबुक ज्ञान करारा।८४०।	सतनाम
सतनाम	यह शब्दे पैठे मांझ मंझारा। यह शब्दे पीवे प्रेम अधारा।८४१।	सतनाम	कहें दरिया जिन्हि शब्द निमेरा। यह ताको हंसा पहुंच सबेरा।८४२।	सतनाम	साखी - ७१	सतनाम
सतनाम	शब्द सरासन बाण है, सते शब्द निशान।	सतनाम	कहें दरिया नर वांचिया, सतगुरु की पहचान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	यह हीरा सोई जगत में लहे। यह छोटी बड़ी बात सब सहे।८४३।	सतनाम	यह जैसा राजा रंक कहावे। एके रंग दूजा नहिं भावे।८४४।	सतनाम	दूजा दोविधा जेहि नहिं होई। भक्त नाम कहावे सोई।८४५।	सतनाम
सतनाम	ब्राह्मण सोई जो ब्रह्महि चीन्हा। ध्यान लगाय रहे लौ लीन्हा।८४६।	सतनाम	क्रोध मोह तृष्णा नहिं होई। पंडित नाम सदा है सोई।८४७।	सतनाम	संध्या गायत्री जप नहिं जाना। भेद निरखि जिन्हि निर्मल ज्ञाना।८४८।	सतनाम
सतनाम	सरगुण सरूप बिरला जन पावे। निर्गुण नाम सो सहज लखावे।८४९।	सतनाम	पूर्ण पंडित कहावे सोई। अठारह गुण ब्राह्मण के होई।८५०।	सतनाम	अठारह वर्ण के राजा सोई। ब्रह्म चीन्हे बिनु जात बिगोई।८५१।	सतनाम
सतनाम	नौ गुण सूत सम जोरि सुधारा। गांठि तीन मोहकम कै डारा।८५२।	सतनाम	काम क्रोध लोभ बड़ भारी। बोलहु पंडित बचन विचारी।८५३।	सतनाम	पंडित शब्द करहु निरुवारा। का तुम जपहु कौन पद सारा।८५४।	सतनाम
सतनाम	केहिपर हंसा होइहे असवारा॥ कैसे उतरत भव जल पारा।८५५।	सतनाम	सतगुरु जाति पांति नहिं लीजै। जाति पूछे तेहि पातक दीजै।८५६।	सतनाम	कहों शब्द सुनु सन्त सुबानी। सतगुरु बिना करहिं यम हानि।८५७।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७२	सतनाम	दरिया भव जल अगम है, सतगुरु करो जहाज।	सतनाम	तापर हंस चढ़ाई के, जाय करो सुखराज॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	पुरुष नाम ना कहो बुझाई। प्रगट अहे की गुप्त समाई।८५८।	सतनाम	कहो निश्चै लोक निरुआरा। केहि विधि मंडल केर द्वारा।८५९।	सतनाम	केहि विधि जोति रहे छवि छाई। कहु कैसे हंसा सुरति समाई।८६०।	सतनाम
सतनाम	केहि विधि नारि रहे रखावारी। कौन रुप वोय रहे संवारी।८६१।	सतनाम	कैसे हंसहिं परिछि उतारी। कैसे होखो मंगल चारी।८६२।	सतनाम	कैसे हंसा अमृत पावे॥ कैसे पुरुष के जाय समावे।८६३।	सतनाम
सतनाम	सर्वज्ञ सदा प्रगट है भाई। लखि न जाय मन मैल समाई।८६४।	सतनाम	हममें तुममें देखु विचारी। जौं दर्पण में प्रतिमा डारी।८६५।	सतनाम	प्रगट भया तहं परिमल रंगा। कुबुद्धि काल मन अपनहिं भंगा।८६६।	सतनाम
सतनाम	उत्तर दिसि मंडल केर द्वारा। तेहि दिशि हंसा सुरति सुधारा।८६७।	सतनाम	जगमग जोति रहे छबि छाई। बाहर भीतर एक लखाई।८६८।	सतनाम	सुरति खोजे तब निरति समाई। पूर्ण ब्रह्म ज्ञान होई जाई।८६९।	सतनाम
सतनाम	पायर दीप नारी वोय रहई। मंगल चार अमृत मुख लहई।८७०।	सतनाम	छिरिकि सुगंध हंस सिर डारी। बोलहिं मंगल बहुत सुठारी।८७१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ७३	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सौधा अग्र परिमल की झरी है, छिरिकि बहुत सुठारि।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	दया दर्श दीदार में, मेटा कल्पना झारि॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम	पुरुष एक सबहिं ते ज्ञानी। सन्तन्हि महिमा सदा बखानी।८७२।	सतनाम	ताहि सुमिरे हंसा सुख पावे। कबहिं ना या जग भटका खावे।८७३।	सतनाम	शब्द विचारि करहिं नर लोई। अमर लोक कहं पहुंचे सोई।८७४।	सतनाम
सतनाम	शब्द विवेकी भक्त कहावे। बिनु शब्दहिं जग भर्मावे।८७५।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - ७४	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	शब्द सरासन बाण है, गहो चरण चित लाय।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	सतगुरु शब्द विचारिये, दुर्मति सकल मेटाय॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतगुरु शब्द प्रेम रस पीजै। काल कुबुद्धि दूरि सब कीजै।८७६।	सतनाम	शब्दे निर्गुण नाह हमारा। ताके खोजहु ज्ञान करारा।८७७।	सतनाम	वेद लोक सब कहें बनाई। स्वपने निर्गुण नाह न पाई।८७८।	सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सत	पुरुष	वोय	विमल	विरोगा। प्रेम प्रीति छीजै नहिं योगा।८७६।	मनसा मालिनि आपु देखावे। कामदेव तहं मंगल गावे।८८०।	आत्मदेव की दर्शे बानी। सींचहिं प्रेम सुख बहुत बखानी।८८१।
सतनाम	सतगुरु	आगे	सुख	बहुतेरा। सतपद का जौं करे निमेरा।८८२।	बूझहु पंडित सत की बानी। निरखि निरंतर निर्गुण ठानी।८८३।	पंडित सो गुण होय जनेऊ। जौं करता के जाने भेऊ।८८४।	जौं निर्गुण सूझे विस्तारा। पंडित तेजहिं वेद के भारा।८८५।
सतनाम	साखी - ७५						
सतनाम	शास्त्र गीता भागवत, पढ़ि के पावे नहिं मूल। प्रेम प्रीति जब निश्चय लागे, तब पावे स्थूल॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	निश्चय नाम	प्रेम लौ लावे। सो हंसा छपलोक सिधावे।८८६।	जाय छपलोक	बहुरि ना अवना। जन्म-जन्म के मेटु कल्पना।८८७।	ऐसे बूझहु पंडित भाई। संग लेहु सतनाम सहाई।८८८।	काया अन्दर है ब्रह्म निजु बासा। ताहि चीन्हें प्रेम परगासा।८८९।	कहों बानी सुनहु सुजाना। बिना भेद हंस नहिं जाना।८९०।
सतनाम	सुनहु भेद पंडित हंस की आदी। साच बात कहे सो बादी।८९१।	ब्रह्म फूटि अंश भौ तीना। सत पुरुष इन सबते भीना।८९२।	प्रतिविम्ब घट प्रगत अहई। पुरुष तेज इमि कर जग लहई।८९३।	देखाहु ज्ञान यह काया बिलोई। अपने आपु में जाय समोई।८९४।	सुरति कमल कहों निजु बानी। सुखमनि धाट करो पहचानी।८९५।	घेरि गगन घन बरसे घ्राणी। दरिया दिल बिच सुरति समानी।८९६।	निश्चै सुरति ज्ञान रस सानी। पीवे प्रेम तथां अमृत बानी।८९७।
सतनाम	साखी - ७६						
सतनाम	इतना ज्ञान भक्ति का भेव, दिल सागर मन लाय। पंडित बारह बानी होखे, काल कबहिं नहिं खाय॥						
सतनाम	चौपाई						
सतनाम	धन्य वोय पंडित धन्य वोय ज्ञानी। धन्य वोय सन्त जिन पद पहचानी।८९८।	धन्य वोय योगी युक्ता मुक्ता। पाप पुन्य कबहिं नहिं भुक्ता।८९९।	धन्य वोय शिष्य जो करे विचार। धन्य वोय सतगुरु जो खेवनिहार।९००।				

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	धन्य वोय नारी पिया रंग राती। सोई सुहागिनि कुल नहिं जाती।६०१।	सतनाम	अखंडित ब्रह्म पंडित सो ज्ञानी। मन के रंग बुझहू निजु बानी।६०२।	सतनाम	जो कर्त्ता के भेद बतावे। शिष्य होय तब जग समुझावे।६०३।	सतनाम
सतनाम	ब्राह्मण वेद पढ़े का पावे। जीव मारि मासु मुख लावे।६०४।	सतनाम	ताकर बात माने संसारा। कैसे लेई उतारहिं पारा।६०५।	सतनाम	मांस मछली ब्राह्मण जो खाई। अंतकाल फेर जम घर जाई।६०६।	सतनाम
सतनाम	सो नहिं बाचे कौनो उपाई। परे नरक चौरासिहिं जाई।६०७।	सतनाम	साखी - ७७	सतनाम	सतनाम अमृत नहिं पायो, कैसे होय उबार।	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया जग अरुझे, एक नाम बिना संसार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	निरखि नाम निजु पंडित कहावे। तब अपने गुण जग समुझावे।६०८।	सतनाम
सतनाम	पंडति बारह बानी होई। कबहीं न यमपुर जात बिगोई।६०९।	सतनाम	सपने कबहिं न या जग आवे। सतगुरु नाम ज्ञान निजु पावे।६१०।	सतनाम	छपलोक की बातें कहेयू। केवल हंस हिरम्बर रहेयू।६११।	सतनाम
सतनाम	कहेउ भेद हंस निजु जाना। जाते हंस सब करहिं पयाना।६१२।	सतनाम	कहो सत पद इमि मन अनन्ता। दूरि जाय जनि करहु भनन्ता।६१३।	सतनाम	अरसठ तीरथ अहै शरीरा। तामें बसे अनूपम हीरा।६१४।	सतनाम
सतनाम	जबहीं हीरा हिरम्बर पावे। तब हंसा छपलोक समावे।६१५।	सतनाम	सतगुरु ज्ञान सुनो सत बानी। तेजहु पंडित जग की सयानी।६१६।	सतनाम	करहु प्रेम सन्तन से जाई। दर्शन प्रेम मिथ्या नहिं भाई।६१७।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७८	सतनाम	साखी सकल संसार में, सन्तो करहु बिचार।	सतनाम	नाम नौका ज्ञान केवट, खेई उतारो पार॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	बानी एक घट-घट में समानी। तेहि बानी के मर्म न जानी।६१८।	सतनाम	जग में जोगी हैं बहुतेरा। जौं ना करे घट भीतर डेरा।६१९।	सतनाम
सतनाम	ज्ञान गमि नहिं करे बिचारा। निर्गुण सर्गुण नहिं निरुवारा।६२०।	सतनाम	जौं जग जीवहिं वर्ष पचासा। जौ ना मन सतगुरु के पासा।६२१।	सतनाम	कल्प कोटि भवसागर परई। कष्ट कल्पना बड़ दुःख सहई।६२२।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नहिं पायो छपलोके बासा। फेरि फेरि करहिं यम के त्रासा।६२३।	जग कामिनि सो रहे निनारा। मनसा कामिनि करो बिचारा।६२४।	जब होखे सतगुरु के दासा। तब सब छुटिहें यम के त्रासा।६२५।	सो योगी जग सांच कहावे। जौ कर्ता के भेद बतावे।६२६।	जौ मन थीर होय भक्ति दृढ़ावे। सार शब्द का परिचै पावे।६२७।	अगुमन काम करे नर जाई। पेड़ पकड़ि तब डारि देखाई।६२८।	अग्र नख तहां हंस बैठावा। आपे निरति तब सुरति समावा।६२९।
अष्टदल बृगसित बिमल बिरोगा। छवचक्र मणि मुक्ता योगा।६३०।	निः अक्षर निरखि प्रेम पद पावे। छुटि जाय तिमिर गगनझरि लावे।६३१।	प्रेम पंथ मह बैठे सोई। तैं मैं संशय जात बिगोई।६३२।	शीश उतार दक्षिणा जो देवे। को हमको तुम का कहिं लेवे।६३३।	आखार भेद कहे सब जाई। अक्षर मांह निः अक्षर पाई।६३४।	कहे दरिया सोई सन्त सुजाना। यह भेद बिरला केहु जाना।६३५।	साखी - ७६
गगन गोफा महं पैठि के, देखहु शब्द अमान।	छूटि जाय जग संशय, यम के मरदहु मान॥	शब्दे धरती शब्दे अकाशा। शब्दे भक्ति प्रेम प्रगाशा।६३६।	शब्दे रचल सकल संसारा। शब्दे बांधल लोक विस्तारा।६३७।	चौथा लोक शब्द की बानी। शब्दे समुन्द बांधल ज्ञानी।६३८।	शब्द बिना नहिं होखे पारा। शब्दे पंडित करो बिचारा।६३९।	ऊँकार वेद जगत फैलाई। मूल भेद बिरला केहु पाई।६४०।
कहनी कथा ज्ञान विस्तारा। मूल भेद शब्द निजु सारा।६४१।	साखी - ८०	मूल शब्द निजु सार है, कहनी कथा अपार।	शिवे शक्ति मन साधि के, उतरि जाय भवपार॥	चौपाई	शून्य शून्य सब करे पुकारा। शून्य न होखे हंस उबारा।६४२।	शून्य न धरती शून्य न पानी। शून्य कतहिं ना देखल ज्ञानी।६४३।
सब महं देखिये शब्द के पूरा। चीन्हे बिना यम देत है शूरा।६४४।						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मुक्ति पदारथ खोवे गंवारा। समुझि लेहु भेद निजु सारा।६४५।	सतनाम	करनी काम सकल संसारा। करनी कथहिं काम विस्तारा।६४६।	सतनाम	करनी काम कामिनि के साथ। बिनु चीन्हे नहिं होंहिं सनाथा।६४७।	सतनाम
सतनाम	साखी - ८१	सतनाम	कौन लोक वोय अचल है, जहं हंस करहिं कलोल।	सतनाम	जहं शीतल शब्द उचारहीं, भयो हीरा अनमोल॥	सतनाम
सतनाम	अभय लोक वोय अचल है, जहं अजरा जोतिवराय।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	भव सिन्धु बेकार त्रिविध जल भारी। सतनाम निजु शब्द बिचारी।६४८।	सतनाम
सतनाम	काया कबीर जगत महं भारी। हारे पंडित वेद पुकारी।६४९।	सतनाम	वेदे अरुझि रहा संसारा। मृत्यु अंध परलय तर डारा।६५०।	सतनाम	चोर चोराय सभे जीव खाई। चोरहिं चीन्हि तबे सुख पाई।६५१।	सतनाम
सतनाम	आपु निरंजन सकल पसारा। फन्द द्वन्द्व कर्म रचि डारा।६५२।	सतनाम	यह तीन लोक निरंजन राई। चौदह चौकी यम बैठाई।६५३।	सतनाम	एको हंस नहिं होखाहि पारा। बीचहिं भस्म करे जरि छारा।६५४।	सतनाम
सतनाम	काया कबीर कीन्ह पैसारा। सतलोक के राह सुधारा।६५५।	सतनाम	साखी - ८२	सतनाम	हारयो यम सतनाम से, हाथ डंडा दिन्हों डारी।	सतनाम
सतनाम	अमर लोक कहं जाइहो सन्त ना आवहिं हारी॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	कौन देश हंसा चलि जाई। भवजल जल तो अगम गोसांई।६५६।	सतनाम
सतनाम	बड़ा जगाति भयो जग पीरा। कौन युक्ति से देवें बीरा।६५७।	सतनाम	योग युगुति भेद पहिचानी। उपजे प्रेम भक्ति निजु ज्ञानी।६५८।	सतनाम	होय हीरा तब निर्मल बानी। भक्ति हृदय निरन्तर ठानी।६५९।	सतनाम
सतनाम	शब्द बिचारि ज्ञान करुथीरा। सत सुक्रित का देवे बीरा।६६०।	सतनाम	देवे परवाना सत के बानी। चरणामृत लेवे मानी।६६१।	सतनाम	सार शब्द चीन्हों चितलाई। सत लोक शब्द पहुंचाई।६६२।	सतनाम
सतनाम	अति सुखासागर कहा न जाई। जो जाने अमृत फल पाई।६६३।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द - १३			
सतनाम			शोभा सुन्दर प्रेम मंगल, गगन में झरि आवहीं।		सतनाम	
			अति झलाझलि ज्योति निर्मल, ज्ञान को गुन गावहीं॥			
सतनाम			अजर अमर हंस वंश तहां, मोती मणि चित चूंगहीं।		सतनाम	
			जरा मरन ते रहित अमरपुर, बहुरि न भव जल आवहीं॥			
सतनाम			सोरठा - १३		सतनाम	
			सतगुरु ज्ञान बिचारि, संशय रहित अमरपुर।			
सतनाम			भक्ति करहिं नर नारि, दयावन्त सम दृष्टि है॥		सतनाम	
			दिल दरिया दर्पण देखिये, अंजन करु गुरु ज्ञान।			
सतनाम			अगम निगम गति कंठ है, बिमल चरण चितध्यान॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			ज्ञान विराग विवेक विचारा। सहज सुरति भव सिन्धु उबारा।६६४।		सतनाम	
			आतम दर्श ज्ञान जब होई। व्यापक ब्रह्म देखो सत सोई।६६५।			
सतनाम			प्रतिबिम्ब घट परगट अहई। झमिकर ब्रह्म ज्ञान मत कहई।६६६।		सतनाम	
			जहां देखो तहं आतम दर्शी। मानो मोद शील की अरसी।६६७।			
सतनाम			जहं देखो तहं नाम अनूपा। मानो दर्पण दर्श स्वरूपा।६६८।		सतनाम	
			वोय निर्गुण रहित समतूला। अक्षय छत्र मणि मंगल मूला।६६९।			
सतनाम			काटे कर्म कपट नहिं राखो। उर अन्तर मुख नामहिं भाखो।६७०।		सतनाम	
			साखी - ८३			
सतनाम			भव सिन्धु त्रिविध बेकार जल, वोहित सुक्रित साथ।		सतनाम	
			गुरु सतगुरु करु कनहरिया, खेवनि वाके हाथ॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			तब नहिं कर्ता किर्तम कीन्हा। तब नहिं निगम नेति अस चीन्हा।६७१।			
सतनाम			तब नहिं क्षिति ना शेष महेश। तब नहिं सुरसरि आदि गनेश।६७२।		सतनाम	
			तब नहिं दिन मनि इन्द्र प्रगासू। तब नहिं उडगन गगन नेवासू।६७३।			
सतनाम			तब नहिं दया धर्म प्रसंगा। तब नहिं उत्पत्ति नहिं गंगा।६७४।		सतनाम	
			तब नहिं यज्ञ योग नहिं जापा। तब नहिं मुक्ति तब नहिं तापा।६७५।			
सतनाम			साखी - ८४		सतनाम	
			अब कुछ उत्पत्ति करन चाहो, चिन्ता चेतनि चित चीन्ह।			
सतनाम			नारि पुरुष रस रंग में, यह कछु इच्छा कीन्ह॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मन्सा रूप कामिनि जो कीन्हा। अष्टभुजी छवि छेंके लीन्हा।६७६।	सतनाम	देखत रूप निरंजन अंजेऊ। लोभ छोभ सादर सुखा सजेऊ।६७७।	सतनाम	देखत पल भर रहा न गैऊ। नैन प्रेम सुखा बहुते भैऊ।६७८।	सतनाम
सतनाम	जब कामिनि से भौ परसंगा। उपजेव मन्मत भाव अनंगा।६७९।	सतनाम	तेहि महं तीन देव तब भैऊ। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कहेऊ।६८०।	सतनाम	तेहू तीन भाग तब कीन्हा। कन्या तीनि तत्क्षण दीन्हा।६८१।	सतनाम
सतनाम	आप निरन्तर जोति होय जागी। सेवा करहिं भोग रस लागी।६८२।	सतनाम	माया चरित्र को चित चलावे। भरम मोह तीन देव मतावे।६८३।	सतनाम	ब्रह्मा की ब्रह्माइनि जानी। विष्णु के विष्णुआइनि रानी।६८४।	सतनाम
सतनाम	शंकर के संग देवी भैऊ। त्रिविधि ज्ञान तीनि मिलि ठैऊ।६८५।	सतनाम	साखी - ८५	सतनाम	निगम चारि उत्पन्न भयो, चतुरानन मुख बैन।	सतनाम
सतनाम	उच्चरेव शब्द अनाहद, झंझकार मद ऐन॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	निराकार नहिं अहे अकारा। सोई बिरंच अस कीन्ह बिचारा।६८६।	सतनाम
सतनाम	नहिं मुख श्रवण नयन नहि बाता। अस कहि कथ्यो बिरंच विधाता।६८७।	सतनाम	नाहिं दुख सुख व्यापक माया। सो अहे विदेह धर्म नहिं दाया।६८८।	सतनाम	बिनु पगु चले सुने बिनु काना। बिनु कर निरति वेद कर जाना।६८९।	सतनाम
सतनाम	बिनु चक्षु देखो सप्त पताला। बिनु पूरण प्रगट है काला।६९०।	सतनाम	कहे बिरंच वेद अस भाषा। मूल नहीं डार पत्र नहिं साखा।६९१।	सतनाम	ऐसन ज्ञान भर्मित सब लोका। भव सिन्धु बेकार पड़ा बड़ शोका।६९२।	सतनाम
सतनाम	बिनु पथ चले बहुत दुख पावे। बिनु देखे कहु केहि गोहरावे।६९३।	सतनाम	बिनु परिचै कैसन परणामा। बिनु वपुधर बसे केहि ग्रामा।६९४।	सतनाम	साखी - ८६	सतनाम
सतनाम	निराकार अकार रहित है, कहेव सो भेद अभेद।	सतनाम	टूटे छूटे उर नयनों, विरह विराग ना छेद॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	वोय ब्रह्म सम्पूरण सर्व विराजे। अपने क्षत्र और सिर छाजै।६९५।	सतनाम	दया सिन्धु सुखा सर्व स्वरूपा। बसे निरन्तर सुर नर भूपा।६९६।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुनो श्रवण मुख आमृत आमी। तीनि लोक महं अन्तर जामी।६६७।	मल रहित मनोहर सुन्दरताई। अक्षौ अशोक सुख सन्तन गाई।६६८।	विमल विरोग वोय ब्रह्म निकेता। वोय पर चिन्त चिन्तामणि हेता।६६९।	निमिष लोचन जेहि जन पर लागा। भवसिन्धु सहजे सुख पागा।१०००।	वोय जीवन मुक्त जिन्द जग मूला। मातु पिता नहिं माया अंकूला।१००१।	निर्गुन सगुन दुनहुं ते न्यारा। सत स्वरूप वोय विमल सुधारा।१००२।	यह पद निश्चय बूझे सोई। हृदय अंकुर ज्ञान जब होई।१००३।
सतगुरु ज्ञान दीपक जब लेसे। वस्तु अनूपम सुरति सुरेसे।१००४।	यह पांच तत्व तन प्रगट देखा। निजु गहि प्रेम प्रीति सत रेखा।१००५।	मोहिं से कहन कहेवो जग माहीं। तदपि कहे बिनु रहा न जाहीं।१००६।	जननायक तुम निरगुण निरन्ता। होंहि सनाथ सुमिरहिं सब सन्ता।१००७।	मैं कुमुदिनि तुम पूरण चन्दा। मैं अधीन करूं परम अनन्दा।१००८।	मैं चकोर तुम दृष्टि अनूपा। चुभेव प्रेम रस पलक स्वरूपा।१००९।	
छन्द - १४						
सभ तेजि भर्म विकार जग को, सन्त सो गुण गावहीं।						
कंज पुंज रस मोद मधुकर, सर सरोज पर धावहीं॥						
लै लपट लागेव घ्राणि घन में, अमृत छवि तहं छावहीं।						
दर्श दरिया परशु चरण, चन्द चकोर पद पावहीं॥						
सोरठा - १४						
पद पंकज करूं ध्यान, मणि आगे दीपक कहा।						
सुनहू सन्त सुजान, सुखद सदा इमिकर लहा॥						
चौपाई						
जिन्हि नहिं बिमल चरणचित आना। मरकट होय के भरमु निदाना।१०१०।	सुनत श्रवण सँक नहिं आना। होय भुवंग विष करहिं पाना।१०११।	लोचन ललचि नाम नहि पेखा। नयन बेहूना क्रिमि के लेखा।१०१२।	भक्ति हेतु सुमिरे जो ज्ञानी। मिले बिमल रस आमृत सानी।१०१३।	जौं सन्त दरश पद पावन करई। तौ चिन्तामणि चिन्ता सब हरई।१०१४।	सुने श्रवण अभ्यन्तर राखो। लोचन ललित नाम रस चाखो।१०१५।	रसना रसि बसि आमृत पीवे। यह जग मांहि सोई जन जीवे।१०१६।
सतगुरु आज्ञा लोचन लोचे। हरे सभे कलि मल अघ मोंचे।१०१७।						
50						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
समुझि सुमिरु गुण साहेब नीका। सभसे सरस भाल मणि टीका।१०१८।	जौं तरनी जल जात तराई। नाम सुमिरु जल वोहित पाई।१०१९।	साखी - ८७	पदुम प्रगास मधुपति मद पावन, लगेव चरण चितमोर।	बिलगि बिहरि फिरि उलटिकंज पर, फणि मणि करत न भोर॥	चौपाई	कर्म योग यम जीते चहई। चढ़ि पपीलक फेरि भव अहई।१०२०।
बिहंगम चढ़ि गयो अकाशा। बैठि गगन चढ़ि देखु तमाशा।१०२१।	महा मुद्रा उन्मुनि पेखे। अनवन भांति मोती तहं देखे।१०२२।	छटा चमकि वर्षे धन धानी। परिमल अग्र वास रस सानी।१०२३।	इंगला पिंगला सुखमनि घाटा। तहां बंकनाल रस पीवे बाटा।१०२४।	षोडश दल कमल वृगसाना। लै लपटि लगे मधुकर ललचाना।१०२५।	सरिता तीन संगम तहं भैयू। वारि बयारि अमृत रस पैयू।१०२६।	चन्द्र सूर दूवो करे बेलासा। उदय अस्त फेरि होंहिं प्रगासा।१०२७।
वोय इंगला चन्द्र वाहिनी कहिया। पिंडाला भानु प्रकाशित रहिया।१०२८।	साखी - ८८	चारि अवस्था तीनि गुन, पांच तत्व है सार।	प्रेम तेल तूरी बरे, भया ब्रह्म उंजियार॥	चौपाई	यह दुई चक्र भर्मित तिहुं लोका। कामिनि कनक महा बड़ शोका।१०२९।	उभय त्यागि समरथा है दूजा। ताको कमल चरण का पूजा।१०३०।
तेजि कंदर्प कामिनि नहिं साथा। सुमिर नाम निजु होहिं सनाथा।१०३१।	सो जन सामर्थ सदा सहाई। मुक्ति सनीप सदा फल पाई।१०३२।	वोय परिचै नाम भजे ब्रह्मण्डा। दनुज दावन पाप शत खंडा।१०३३।	नाम प्रताप युग-युग चलि आवे। सकल सन्त गुण महिमा गावे।१०३४।	संत रहनि भौ वारिज वारी। सदा सुखी निर्लेप विचारी।१०३५।	जल कुकुही जल मंह जो रहई। पानी पर कबहिं नहिं लहई।१०३६।	दधि मथो घृत बाहर आवे। फेरि घृत नहिं उलटि समावे।१०३७।
फूल वास से तिल भया फूलेला। बहुरि तिल्ली तेल नहिं मेला।१०३८।	इमि करि सन्त असन्त गुण लहई। भौ निकलंक नाम गुण गहई।१०३९।					
51						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
औघट घाट लखो सो सन्ता। सो जन जानि सदा गुणवन्ता।१०४०।	अजपा जाप अनाहद नादा। तेजे भौ भर्म सो वाद विवादा।१०४१।	अमृत बूंद तहां झरे निकन्दा। ऐन अंजीर मगन मन चन्दा।१०४२।	साखी - ८६	मणि मानिक दीपक बरे, उन्मुनि गगन प्रकाश।	मन मोदक मद तेजि के, मेटा जरा जम त्रास॥	चौपाई
सुख शारद नारद मुनि गावे। सो सतगुरु पद प्रगट देखावे।१०४३।	शेष सहस मुख बोले बानी। सतगुरु महिमा तेहु बखानी।१०४४।	सन्त साधु मिलि करो बखाना। निकैवल निर्भय नाम समाना।१०४५।	माया चीन्हे सन्त है सोई। ज्ञान भक्ति का करे बिलोई।१०४६।	जो माया जग करे विनाशा। भौचक परे भर्मि के त्रासा।१०४७।	आवे जाय जगत करि रचना। ज्यों किसान खेती करे जतना।१०४८।	जब चाहे तब लावनि लावे। जोति बोई के फेरि उपजावे।१०४९।
जैसे चीक अजया प्रति पाला। बहुत जतन के किन्ह निहाला।१०५०।	स्वारथ स्वाद जानि के मारी। यहि विधि काल करे रखवारी।१०५१।	सतगुरु शब्द मानु परमीना। पाय परम पद होहु अधीना।१०५२।	भव संशय सभ जाय ओराई। सकल सृष्टि जेहि मांह समाई।१०५३।	सतगुरु सतनाम लौलीना। मन मोदिक के मद भौ छीना।१०५४।	नाम पियूषन आमृत चाखे। उर अन्तर मुख नामहिं भाखे।१०५५।	साखी - ६०
जब सतगुरु पद पाइये, मेटे भव भर्म उदास।	मोह सागर सम सूखिया, मेटे तम तेज प्रकाश॥	छन्द - १५	हंस वंश गति मानसरोवर, चूंगत मोती घनी।	पय पाय विवरन वरन बिलगेव, संसृत जल अमृत कनी॥	मन देखु विचार सब लोभ ललचि, सुमिरु नाम निर्गुणगनी।	कहे दरिया दरश सतगुरु, कंज पुंज अमृत सनी॥
सोरठा - १५	पद पंकज करु ध्यान, विषय बेकार रस परि हरे।	दूजा कोई नहिं आन, सत शब्द जाके बसे॥				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	राम जोति जग सब कोई जानी। कृष्ण रूप कमला संग रानी।१०५६।	सतनाम	रोग दोख सुख भोग बेलासा। करुना काम बाम गृह बासा।१०५७।	सतनाम	जेहि माया सुर नर मुनि नाचा। बपु धरनी धर केहु नहिं बांचा।१०५८।	सतनाम
सतनाम	देहिं धरि सब खोजहिं पंथा। माया अथाह किमि होहिं सनाथा।१०५९।	सतनाम	बूड़त भव में उभि चुभि जावे। जेहि नहिं सतगुरु ज्ञान समावे।१०६०।	सतनाम	कवि बरनी कर निन्दक पावन। रहनि विशोक रोग दुख दावन।१०६१।	सतनाम
सतनाम	चीन्हे बिना कवि बहुत भुलाना। ज्ञान विराग विवेक न जाना।१०६२।	सतनाम	स्वारथ स्वाद सभे केहु आना। माया रूप सो ब्रह्म बखाना।१०६३।	सतनाम	मन मरले शिव शंकर योगी। मन रखले इन्द्री रस भोगी।१०६४।	सतनाम
सतनाम	कृष्ण राम मनहिं को रंगा। मन ते उत्पत्ति मनते भंगा।१०६५।	सतनाम	मनहिं चीन्हि प्रेम पद पावे। मनते योगी जग समुझावे।१०६६।	सतनाम	साखी - ६१	सतनाम
सतनाम	दधि सतु से अमृत पिवे, रवि सुत आऊ न पास।	सतनाम	चला मार ब्रह्माण्ड के, पूरण प्रेम प्रगास॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	तन सरवर मन देखु बिचारी। तामे सरिता तीन सुधारी।१०६७।	सतनाम	वामे मान सरोवर अहई। हंस बंश कौतुक तहं करई।१०६८।	सतनाम	चूंगहीं मोती निर्मल नीका। झलके प्रेम मणि मस्तक टीका।१०६९।	सतनाम
सतनाम	हंस बंस गुण ज्ञान गम्भीरा। नीर छीर विवरन करू थीरा।१०७०।	सतनाम	काक कपूत कर्म बहु हीना। भक्षो कुबास मीन मुखा लीना।१०७१।	सतनाम	हंस कौतुक देखि भयो मलीना। निर्मल सन्त मन्त जग भीना।१०७२।	सतनाम
सतनाम	साखी - ६२	सतनाम	जग लागि दया न उजपे, सब युग जाहिं अनन्त।	सतनाम	तब लागि भक्ति न प्रेम पद, शक्ति शोक बिनु कन्त॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	सगुण निर्गुण करो विचारा। करो निखेद वेद निजु सारा।१०७३।	सतनाम	निर्गुण सो विनसे नहिं भाई। अजर अमर देह सुखादाई।१०७४।	सतनाम
सतनाम	सगुण सो बन्धन में लागा। मुनि बिराग योग सब जागा।१०७५।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऊँकार ते प्रगट है माया। सोई नन्द धर कृष्ण कहाया।१०७६।	हत्यो कंस जिन्हि बाण विशाला। बलिहिं बांधि जिनि दीन्ह पताला।१०७७।	सो माया जग चीन्हे न कोई। परा अथाह वेद मत सोई।१०७८।	आवे जाय विश्वम्भर देवा। जो जन जानि विचारे भेवा।१०७९।	सो लीला उन्हि रचेव बनाई। गोप सखा संग गाय चराई।१०८०।	जो भग ते आये भगवाना। ब्रह्म ज्ञान वेद मत जाना।१०८१।
सतनाम	पारवती के जब भव ज्ञाना। महादेव कहं पुछेव जाना।१०८२।	यह माया कि ब्रह्म अमाना। महादेव मोह करि जाना।१०८३।	आदि ब्रह्म अहै भगवाना। इनके भेद कहो निजु ज्ञाना।१०८४।	बोध करि इमि कहि समुझाई। शंकर बहुविधि कथा सुनाई।१०८५।	जाकी ज्योति जग परगट अहई। योगी मुनि ज्ञानी सभ कहई।१०८६।	यह चरित्र बिरले पहचाना। सुनु देवी निजु ज्ञान बखाना।१०८७।
सतनाम	जगदम्बहिं स्थिर तब कीन्हा। आदि ब्रह्म राम कहि दीन्हा।१०८८।	माया चरित्र मोह भगवाना। मुनि पंडित सब ज्ञान बखाना।१०८९।	जब सतगुरु पद परिचै पावे। माया चरित्र सहजे बिलगावे।१०९०।	साखी - ६३		
सतनाम	अहिपति सुरपति कामरिपु, शारद और शुक्रदेव। कहत बितेव युग कल्प लहि, मन माया को भेव॥			चौपाई		
सतनाम	वोय निर्गुण ते रहित अमाना। ज्ञान गमि बिरले पहचाना।१०९१।	वोय जरे मरे नहिं आवे जावे। प्राण पिण्ड सतपुरूष कहावे।१०९२।	सतगुरु प्रेम पीयूषन पावे। ज्ञान रतन मनि सोजन गावे।१०९३।	अखंडित ब्रह्म पंडित जन ज्ञाता। अद्वैत ब्रह्म जीव पर राता।१०९४।	त्वचा ज्ञान जौं स्वारथ अहई। ब्रह्म ज्ञान निरूपण कहई।१०९५।	अनुभव ज्ञान विरला जन जाना। माया की गति नहिं पहचाना।१०९६।
सतनाम	उग्र ज्ञान जब जन के होई। संशय रहित अमरपुर सोई।१०९७।	साखी - ६४			श्रवण ज्ञान चित में बसे, संध्या सन करु नेम। कहे सुने हिय में बसे, दरिया दर्शन प्रेम॥	
सतनाम						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	बिनु देखे दुख दारुण दावे। बिना ज्ञान भव चक्र में आवे।१०६८।	सतनाम	बिनु परिचै यम शासन करई। सले शूल बुद्धि बल सब हरई।१०६९।	सतनाम	सन्त निकट बिनु निपट दुखारी। मर्कट मूठि यम जाल पसारी।११००।	सतनाम
सतनाम	निकट फन्द चीन्हें नहिं कोई। ज्यों मृग मद ते आंधर होई।११०१।	सतनाम	अमर कोष कसि बाण विशाला। निकट बसे सूझे नहिं यम जाला।११०२।	सतनाम	अमृत तेजि वारुणि करू पाना। नाम भजन बिनु विषधर जाना।११०३।	सतनाम
सतनाम	जाके दया धर्म नहिं राता। जम जालिम जीव करू उत्पाता।११०४।	सतनाम	छन्द - १६	सतनाम		सतनाम
सतनाम	जीवन जन्म असाधि नरकी, नरक नारा सो बहे।	सतनाम	यम चीन्हीं बिनु बिचारिके, कलि कष्ट जाके सो अहे॥	सतनाम	यम शासन कसि मुश्क चढ़ि, बसि काल के घर जीव दहे।	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया दर्श बिना, परस काको दुःख सहे॥	सतनाम	सोरठा - १६	सतनाम	सतगुरु बचन प्रमान, जो जन चाहे मुक्ति फल।	सतनाम
सतनाम	सुनो श्रवण निजु ज्ञान, उर अन्तर जबहीं बसे॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	यह मन आदि अन्त चलि आवे। यह मन सुर नर मुनिहिं नचावे।११०५।	सतनाम
सतनाम	मन चिन्हला बिनु बड़ दुख पावे। मन चिन्हला बिनु मूल गंवावे।११०६।	सतनाम	मनचिन्हु २ ज्ञान संयोगी। मन चिन्हला बिनु बहुत बियोगी।११०७।	सतनाम	मनके शिव बिरंचि सब लागे। मनहिं के योगी जग में जागे।११०८।	सतनाम
सतनाम	मनहिं वेद कितेब सुनावे। मनहिं षट दर्शन सब गावे।११०९।	सतनाम	सतगुरु भेद बूझहु निजु बानी। जेहि खोजे होय निर्मल ज्ञानी।१११०।	सतनाम	बोलता ब्रह्म दीसे निजु सोई। ज्यों दर्पण में प्रतिमा होई।११११।	सतनाम
सतनाम	याके देखे तो वाके देखे। ब्रह्म दृढ़ाय दृष्टि महं पेखे।१११२।	सतनाम	वोय ना मरे जीवे ना जाई। जाके अंश सभ जीव कहाई।१११३।	सतनाम	वोय निरालेप माया नहिं हेता। यह त्रिगुन बीज वोइये जौं खेता।१११४।	सतनाम
सतनाम	वोय विमल स्वरूप सुधारस बानी। पद पहिचानहु निर्मल ज्ञानी।१११५।	सतनाम	साखी - ६५	सतनाम	अद्वैत ब्रह्म विराग मत, ब्रह्म ज्ञान निरलेप।	सतनाम
सतनाम	आपु चीन्हे औरि चिन्हावे, आतम दर्शी देव॥	सतनाम	55	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मन परमेश्वर मन है राजा। मनहिं तीन लोक महं छाजा।१११६।	सतनाम	यह मन कर्ता विष्णु कहावे। मनहिं विश्वम्भर विश्व पर आवे।१११७।	सतनाम	मनहिं अनल अकाश प्रकाशा। मनहिं पांच तत्व काया करु वासा।१११८।	सतनाम
सतनाम	मनहिं समीर वारि धन घेरे। मनहिं छटा गर्जि धन फेरे।१११९।	सतनाम	मन जनमे नौ बार गोसाईं। मन अनन्त रूप कला देखाई।११२०।	सतनाम		सतनाम
			छन्द - १७			
सतनाम	मन चलावे खंज मीन जौ, मन उड़िगन गगन सोहावहीं।	सतनाम	मन अनल अनिल मन भंवर भर्मित, कंज पुंज पर आवहीं॥	सतनाम	मन कर्म कर्ता काम कामिनि, बाम धाम छवि छावहीं।	सतनाम
सतनाम	मन निशु वासर सोवत स्वप्ना, सर्वरूप बनि आवहीं॥	सतनाम		सतनाम		सतनाम
			सोरठा - १७			
सतनाम	मन संशय सागर भयो, बूड़त अगम अथाह।	सतनाम	सतगुरु दया तरनी दियो, उतरि जाय भवपार॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	जिन्हि सत शब्द खोजा चितलाई। निकट नाम निजु ज्ञान समाई।११२१।	सतनाम	आतम दर्श ज्ञान जब बूझे। प्रेम मग्न हो अपनहिं सूझे।११२२।	सतनाम	तत्व तिलक मणि मुन्द्रा फेरे। अनहद ध्वनि मुरली तहं टेरे।११२३।	सतनाम
सतनाम	यह अजपा संध्या तर्पण करई। गायत्री ज्ञान गमि मति लहई।११२४।	सतनाम	पल-पल सुमिरि प्रेम रस पीजै। मणि मुक्ता तहवां चित दीजै।११२५।	सतनाम	चन्द्र सूर द्वै परिचै भैयू। सरिता तीनि संगम तहं रहेऊ।११२६।	सतनाम
सतनाम	कूपपत्र तहवां भरि पीवे। ब्रह्म दृढ़ाय तहवां सुखा जीवे।११२७।	सतनाम	मंगल मूल है रहनि विशोका। धर्म राय दर कबहिं न रोका।११२८।	सतनाम	अनन्त एक महं रहा समाई। सतगुरु ज्ञान जबे होय जाई।११२९।	सतनाम
			साखी - ६६			
सतनाम	वारिज वारि के उपरे, अलि मंदिर में बास।	सतनाम	दिन मनि दिन भव पत्र में, फूलेव कंज सुवास॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मातु पिता सुत बन्धौ भग्नि। अपना मत में सब कोई मगनी।११३०।	सतनाम	घटत छण-छण जात ओराई। हृदय विवेक ज्ञान नहिं आई।११३१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सब भूले सम्पति स्वारथ मूढ़ा। परे भवन में अगम अगूढ़ा।१९३२।	सतनाम	सन्त निकट फेरि जाहिं दुराई। विषय बास रस फेरि लपटाई।१९३३।	सतनाम	क्षण-क्षण माया मोह लपटाना। सुख-सम्पति बहु स्वारथ साना।१९३४।	सतनाम
सतनाम	अब का सोचसि मदहीं भुलाना। ज्यों सेमरि सेई सुगना पछताना।१९३५।	सतनाम	तब तो कहेब जे सभे एगाना। बन्धु भाई और द्रव्य खजाना।१९३६।	सतनाम	मरन काल कोई संग न साथा। जब जम मस्तक दीन्हों हाथा।१९३७।	सतनाम
सतनाम	मातु-पिता घरनी घर ठाढ़ी। देखत प्रान लीन्ह यम काढ़ी।१९३८।	सतनाम	गाड़े धन गहिरे जो गाड़े। सब छूटहिं माल जहां तक भांडे।१९३९।	सतनाम	भवन भयावन बाहर डेरा। रोवहिं सब मिलि आगन अंधेरा।१९४०।	सतनाम
सतनाम	खाट उठाय कांध कर लीन्हा। बाहर जाय अग्नि जो दीन्हा।१९४१।	सतनाम	जरि गई खलरी सब भस्म उड़ियाना। दिन चारि सोच कीन्ह जो ज्ञाना।१९४२।	सतनाम	फेरि धन्धे लपटानी परानी। बिसरि गई वोय नाम निसानी।१९४३।	सतनाम
सतनाम	खरचहु खाहु दया करू परानी। ऐसे बहुते भये अभियानी।१९४४।	सतनाम	सतगुरु शब्द साच यह मानी। कहे दरिया करू भक्ति बखानी।१९४५।	सतनाम	भूलि भर्मी यह मूल गंवावे। ऐसन जन्म कहां फेरि पोवे।१९४६।	सतनाम
सतनाम	धन सम्पति हाथी जन जोरा। मरन काल संग जाय न तोरा।१९४७।	सतनाम	या तन देह अग्नि में जरिहें। भस्म उड़ाय नहिं फेरि हेरिहें।१९४८।	सतनाम	यह मातु पिता सुत बन्धव नारी। यह सभ पावरि तोरि बिसारी।१९४९।	सतनाम
सतनाम	मेटिहें विस्मय होइहें अनन्दा। तिल अजुरी दे करिहें गंदा।१९५०।					
सतनाम	साखी - ६७					
सतनाम	कोठा महल अटारिया, सुने श्रवण बहुराग।					
सतनाम	सतगुरु शब्द चीन्हे बिना, ज्यों पक्षिन में काग।।					
सतनाम	ग्रन्थ दरिया सागर पूर्ण					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

57